



संतों की मॉब लिंचिंग-
बुद्धिजीवी बोलता क्यों नहीं?

भीलवाड़ा मॉडल-
पछाड़ दिया महामारी को ?



सेन्सर टाइम्स

www.censortimes.com

डाक पंजीयन क्रमांक-एमपी/आईडीसी/1117/2019-2021

वर्ष-17
अंक-2
मासिक
1 मई 2020
पृष्ठ-12
मूल्य- पाँच रुपये

मुस्लिम युवाओं को कट्टर बना रहा है तबलीगी जमात



जमातियों पर लिबरल गैंग की लंबी
खामोशी बहुत कुछ बोल रही है

ऐसे संगठनों पर कार्यवाही ना कर पाने की सरकारों की अपनी अपनी मजबूरियाँ हो सकती हैं लेकिन इन्हीं मजबूरियों से समाज के भीतर से विद्रोह के स्वर भी उपजते हैं। तजलीगी जमात के साथ भी कुछ ऐसा ही हुआ। देश के मुस्लिम समाज के भीतर से ही जमात के विरोध में आवाजें उठने लगीं। बाबरी मस्जिद के पक्षकार रहे इकबाल अंसारी ने तजलीगी जमात की गतिविधियों के चलते उन पर देशद्रोह का मुकदमा दर्ज करने की मांग की है। वहीं शिया वक्फ बोर्ड के चेयरमैन वसीम रिज्वी का कहना है कि, यह दुनिया की सबसे खतरनाक जमात है। यह मुसलमानों का ऐसा समूह है जो पूरी दुनिया में इस्लाम के प्रचार के नाम पर मुसलमान युवाओं को कट्टरपंथी बनाता है।

p-4

राहुल गांधी से बोले रघुराम राजन, गरीबों की मदद के लिए लगेंगे
65,000 करोड़

p12



भीलवाड़ा मॉडल ने आखिर कैसे पछाड़ दिया कोरोना
जैसी महामारी को ?

p-3



अन्दर के पृष्ठ पर.....

अब दवाओं के लिए भी दुनिया
भारत पर निर्भर

P-6

आरोग्य सेतु ने-
दुनिया को दिखाई राह

P-7

जामिया हिंसा मामले में
शरजील पर यूपीपीए लगाया

P-12

अमेरिकी कंपनी का दावा-
प्रभावी साबित हुई उसकी दवा

P-12

सम्पादक की कलम से

कोरोना को लेकर मरीजों की संख्या लगातार वृद्धि के बीच संक्रमण फैलाने को लेकर अब राज्यों विवाद का शुरू होना अत्यंत दुर्भाग्यपूर्ण है।

हरियाणा सरकार ने दिल्ली में काम कर लौटने वाले लोगों से कोरोना फैलाने के आरोप के साथ ही दिल्ली आने वाली सब्जी पर भी रोक लगा दी है। इसके चलते दिल्ली में आने वाली हरी सब्जी की किल्लत के साथ दाम में वृद्धि की संभावना हो गई है। आजादपुर मंडी के व्यापारियों ने बताया कि लॉकडाउन के समय में हरियाणा से ही हरी सब्जी घीया, तोरी, भिंडी, करेला, खीरा, ककरी आदि की 100 गाड़ी के करीब आ रही थीं। आजादपुर एपीएमसी के चेयरमैन आदिल अहमद खान ने बताया कि आजादपुर मंडी में सामान्य दिनों में फल व सब्जियों की आवक आठ हजार टन रहती है। करीब 7686 टन आवक रही। ऐसे आवक सामान्य रही जिससे फिलहाल दामों पर कोई असर नहीं पड़ा। हरियाणा के मंत्री (स्वास्थ्य) अनिल विज ने दिल्ली के मुख्यमंत्री अरविन्द केजरीवाल से कोरोना वैरियर्स को दिल्ली में ही रोकने की मांग की है। दूसरी तरफ तमिलनाडु ने अवैध रूप से लोगों की आवाजाही रोकने के लिए आंध्र प्रदेश के दो एंट्री प्वाइंट्स पर दीवार खड़ी करवा दी है। विज ने कहा कि राष्ट्रीय राजधानी में काम करने वाले कई लोग पास के जरिये हर दिन हरियाणा से आवाजाही कर रहे हैं।

यह प्रदेश में कोरोना वैरियर बन गए हैं। पहले तबलीगी जमात के कई सदस्य दिल्ली से आए, जिनसे 120 पॉजिटिव मिले। इनकी वजह से हरियाणा में संक्रमितों की संख्या बढ़ गई। विज ने कहा कि हमने जांच के बाद कोविड से संक्रमित 120 तबलीगी जमात के सदस्यों को ठीक किया है जो दिल्ली के रास्ते हरियाणा में दाखिल हुए। दिल्ली के स्वास्थ्य मंत्री सत्येंद्र जैन ने हरियाणा के स्वास्थ्य मंत्री अनिल विज के बयान पर सोमवार को पलटवार किया।

उन्होंने कहा कि दिल्ली में कार्यरत सभी हरियाणा निवासियों को कोरोना वैरियर्स करार देना अनुचित है। सत्येंद्र जैन ने कहा कि बहुत से लोग दिल्ली में रहते हुए राजधानी के सीमावर्ती इलाकों में काम करते हैं और इसका उल्टा भी सही है। कोविड से ठीक हो चुके तबलीगी जमात के लोगों के रक्तदान पर उन्होंने कहा कि खून का अलग-अलग रंग नहीं होता। कोई भी व्यक्ति रक्तदान कर सकता है। जैन ने कहा कि हर धर्म सिखाता है कि संकट के ऐसे समय में एक-दूसरे की मदद करो, किसी से बैर न करो। हर धर्म सिखाता है कि दूसरों की जान बचाने के लिए कुछ करें। रोजाना पास लेकर आवागमन करने वालों की दिक्कतें बड़ जाएंगी। यह दुर्भाग्यपूर्ण है कि हरियाणा ने संक्रमण के बढ़ते मामलों के लिए दिल्ली सरकार को जिम्मेदार ठहराया है।

विज द्वारा केजरीवाल को अपने कर्मचारियों को दिल्ली में ठहराने की व्यवस्था की मांग संभव नहीं है। बहुत सारे लोग जो दिल्ली में नौकरी करते हैं, वह हरियाणा में रहते हैं। अगर विज साहब अपनी जिद पर अड़े रहे तो कई चलते कार्यालयों के ठप होने की संभावना हो जाएगी। चलते काम पर इस तरह रोक लगाना देशहित में नहीं माना जा सकता। उम्मीद है कि विज कोई बेहतर तरीका निकालेंगे।

संतों की माँब लिंचिंग पर कोई बुद्धिजीवी बोलता क्यों नहीं? कोई अवार्ड लौटाता क्यों नहीं?



साधुओं की पीट-पीट कर हत्या को आप माँब लिंचिंग मानते हैं या नहीं? अवार्ड वापसी गैंग का कोई आदमी दिखे तो उससे पूछिएगा कि उसने साधुओं की माँब लिंचिंग पर कुछ लिखा क्या? बॉलीवुड के कलाकारों ने प्ले कार्ड दिखाए क्या? तथाकथित बुद्धिजीवियों ने चिट्ठियां लिखीं क्या? साधुओं की हत्या के विरोध में किसी ने कोई ट्वीट किया क्या? सदी के रहनुमा पत्रकार ने अपनी टेलीविजन स्क्रीन काली की है क्या?

मुंबई से सटे पालघर में दो साधुओं की माँब लिंचिंग पर छद्म सेकुलरों और कम्युनिस्टों से इस तरह के कुछ सवाल क्या पूछ लिए, उन्हें बहुत बुरा लग गया है। लगेगा क्यों नहीं बुरा, सवाल पूछने पर तो सिर्फ उनका ही अधिकार है, और किसी का थोड़े है।

हमें मालूम है कि आपने कुछ भी नहीं लिखा होगा। हमें आपकी नेक नीयत पर पूरा भरोसा है। लिखोगे तो उसमें भी दाएं-बाएं कुछ करोगे। क्योंकि आप तो अपनी ही अवधारणा को स्थापित करने निकले हैं कि माँब लिंचिंग तो सिर्फ मुस्लिमों के साथ होती है, हिंदुओं की माँब लिंचिंग थोड़े होती है?

वे तुनक कर कह रहे हैं कि आप थोड़े हमें बताओ कि हमें किस घटना पर लिखना है और किस पर नहीं? हमें किस घटना का विरोध करना है और किसका नहीं? निःसंदेह हम आपको बता नहीं रहे, बल्कि आपको आईना दिखा रहे हैं ताकि आप हमारे सवालों के आईने में अपना चेहरा देख लें।

हिंदुओं की माँब लिंचिंग पहली बार थोड़े हुई है। पहले भी कई बार हो चुकी है। लेकिन, आपने तब भी चुप्पी साधे रखी और आज भी। इसलिए हम भरोसे के साथ कह रहे हैं कि आप खुलकर भीड़ द्वारा हिंदुओं की हत्या को माँब लिंचिंग कह ही नहीं सकते। आप तो बंटवारे के समय लाशों से भर कर आई ट्रेनों को आज तक जस्टीफाई कर रहे हो। कश्मीर से निकाले गए हिंदुओं और उनके साथ हुई माँब लिंचिंग को आप आज भी छिपाने के यत्नासंभव प्रयास करते हो। 'कश्मीर में हिंदुओं के साथ कुछ हुआ ही नहीं', इस झूठ को सही ठहराने के लिए मोटी-मोटी किताबें लिख दीं हैं आपने। आपको पता ही नहीं कि आपकी इन किताबों के बोझ से कश्मीरी हिंदू कराह रहे हैं। 1984 में सिख बंधुओं के साथ जो हुआ, उसको भी जस्टीफाई करने के बहाने आपने ढूंढ़ ही लिए। देवतुल्य महात्मा गांधी की हत्या के बाद महाराष्ट्र में चितपावन ब्राह्मणों की जो माँब लिंचिंग हुई, उसकी तो आपने चर्चा ही नहीं होने दी। यह अध्याय तो जैसे इतिहास की पुस्तक से फाड़ कर फेंक दिया गया है।

ज्यादा पीछे क्यों जाना, इसी दौर की हत्याओं पर भी आपने कब मुंह खोला? स्वामी लक्ष्मणानंद की नृशंस हत्या हुई, आपने चुप्पी साधे रखी। पश्चिम बंगाल के वर्धमान में हिंदू महिला को बच्चा चोर होने के आरोप में पीट-पीट कर मार दिया गया, लेकिन आपने उसकी माँब लिंचिंग पर भी कुछ नहीं बोला। वर्धमान जिले के ही

इंद्रजीत दत्ता को भीड़ ने इसलिए पीट-पीट कर मार दिया, क्योंकि उसने धर्म विशेष के आयोजन के लिए चंदा देने से मना कर दिया। पश्चिम बंगाल के ही 24 परगना जिले में आईआईटी के छात्र कौशिक पुरोहित को भैंस चोर बता कर मार डारा गया। महाराष्ट्र के पंढरपुर में युवक सावन राठौड़ को सरेआम जला दिया गया, लेकिन उस आग की लपटों से आप जरा भी नहीं झुलसे। दिल्ली में डॉ. पंकज नारंग की हत्या उसके बच्चे और पत्नी के सामने कर दी जाती है, लेकिन दादरी से हैदराबाद तक चक्कर लगा आने वाले लोग नारंग के घर नहीं जाते हैं। केरल के कन्नूर में आरएसएस कार्यकर्ता पीवी सुजीत की कम्युनिस्टों ने घर में घुस कर हत्या कर दी। भला अपने ही लोगों के विरुद्ध कैसे मुंह खोलते, सो सब चुप ही रहे। उत्तर प्रदेश के आगरा में हिंदू दलित नेता अरुण कुमार की पीट-पीट कर हत्या कर दी जाती है। आप क्यों बोलते भला, जो आरएसएस या संघ से जुड़ जाता है, आप तो उसको दलित मानते ही नहीं हो। कर्नाटक के प्रशांत पुजारी, उत्तर प्रदेश के कपूरचंद ठाकरे, तमिलनाडु के वी. रमेश, बाड़मेर के 22 साल के खेताराम भील, उत्तर प्रदेश के नवयुवक चंदन, इन सबकी हत्या पर भी तो आपके मुंह में दही जमा रहा। और जब बोले भी तो मुंह से हत्याओं को जस्टीफाई करने वाले कुतर्क निकले। दिल्ली के ध्रुव त्यागी के मामले में तो आपको बेटियों की सुरक्षा का मुद्दा भी नजर नहीं आया। उस अभागे बाप ने अपनी बेटी को छेड़ने का ही तो विरोध किया था, जिसकी कीमत उसे अपनी जान देकर चुकानी पड़ी।

जम्मू-कश्मीर में जिस पुलिस अधिकारी मोहम्मद अयूब पंडित की माँब लिंचिंग हुई थी, उसे भी कहाँ आपने माना। देश के किस कोने में माँब लिंचिंग की घटनाएं हुई हैं, उन्हें बताने के लिए आपने एक नक्शा बनाया था, जिसे 'नॉट इन माय नेम' से आयोजित प्रदर्शनों में दिखाया गया। उस नक्शे पर अयूब पंडित का नामो-निशान नहीं था। उसकी हत्या को, आपने माँब लिंचिंग क्यों नहीं माना, वह तो हिंदू न था...???

महाराष्ट्र के पालघर में जूना अखाड़े के दो साधुओं संत कल्पवृक्ष गिरी, सुशील गिरी और उनके वाहन चालक निलेश तेलगड़े की पीट-पीट कर हत्या कर देना, हिंदुओं की माँब लिंचिंग का पहला मामला नहीं है। ऐसी और भी अनेक घटनाएं हैं। परंतु, छद्म सेकुलरों और अवार्ड वापसी गैंग से जुड़े लोगों को वे सब ध्यान में नहीं होंगी। हो सकता है कि उनके आकाओं ने उन्हें वे सब घटनाएं बताई न हों। आखिर उन्हें तो उन्हीं घटनाओं की जानकारी दी जाती है, जिन पर उन्हें हिंदू समुदाय को निशाने पर लेना है।

इसलिए हिंदुओं की माँब लिंचिंग से आक्रोशित लोग आपको पूछ रहे हैं कि आपने कुछ लिखा क्या, बॉलीवुड के पेड हीरोज ने कार्ड दिखाए क्या, खान मार्केट के पत्रकारों ने प्राइम टाइम किया क्या, तथाकथित बुद्धिजीवियों ने ज्ञापन दिए क्या, चिट्ठियां लिखीं क्या, विमर्श आयोजित किए क्या? इसमें आपको बुरा लगता है तो क्या किया जाए? खैर, आपसे क्या तर्क करना...

भीलवाड़ा के निजी चिकित्सालय के प्रकरण के आते ही 20 मार्च को ही कर्फ्यू लगा दिया। जिले की सीमाओं को सील करना दूसरा बड़ा निर्णय रहा। इसके साथ ही स्थानीय निजी अस्पतालों और होटलों को अधिग्रहित करने में देरी नहीं की। एक तरह से पूरे जिले को ही कोरेंटाइन कर दिया। लॉक डाउन की सख्ती से पालना सुनिश्चित की। घर घर स्क्रीनिंग की गई और चिकित्सकों तथा पैरामेडिकल स्टॉफ सहित इस कार्य में लगे सभी वॉलंटियर्स की जिस तरह से हौसला अफजाई व मनोबल को बनाये रखा गया उससे स्थितियां बेहतर होती गईं। देखा जाए तो भीलवाड़ा मॉडल को इस रूप में देखा जाना चाहिए कि प्रशासन, पुलिस और चिकित्सा स्वास्थ्य के साथ जिस तरह का बेहतरीन तालमेल बनाया गया और उच्च स्तर पर स्वयं मुख्यमंत्री अशोक गहलोत द्वारा समूचे प्रदेश के साथ भीलवाड़ा की मॉनिटरिंग करते हुए स्थितियों पर नजर रखी गई, निर्देश दिए गए और फील्ड में उनकी पालना हुई उसी का परिणाम है कि भीलवाड़ा आज रोल मॉडल के रूप में सामने आया है।

आखिर कैसे पछाड़ दिया भीलवाड़ा मॉडल ने कोरोना जैसी महामारी को

डॉ. राजेंद्र प्रसाद शर्मा

भीलवाड़ा आज समूचे देश के सामने रॉल मॉडल के रूप में उभर कर आया है। दरअसल देखा जाए तो भीलवाड़ा ने सुरक्षा मापदण्डों को कड़ाई से लागू करने के साथ ही योजनाबद्ध तरीके से इस संकट से समूचे जिले और प्रदेश को संक्रमित होने से बचाने के कारगर प्रयास किए।



को बाध्य होना पड़ेगा।

दरअसल आज जिसे भीलवाड़ा मॉडल कह कर पुकारा जा रहा है वह स्थानीय प्रशासन द्वारा उठाए गए कदमों और आपसी तालमेल का अनूठा उदाहरण है। भीलवाड़ा कलेक्टर राजेन्द्र भट्ट ने स्थिति की भयावहता को समझा और भीलवाड़ा के निजी चिकित्सालय के प्रकरण के आते ही 20 मार्च को ही कर्फ्यू लगा दिया। जिले की सीमाओं को सील करना दूसरा बड़ा निर्णय रहा। इसके साथ ही स्थानीय निजी अस्पतालों और होटलों को अधिग्रहित करने में देरी नहीं की। एक तरह से पूरे जिले को ही कोरेंटाइन कर दिया। लॉक डाउन की सख्ती से पालना सुनिश्चित की। घर घर स्क्रीनिंग की गई और चिकित्सकों तथा पैरामेडिकल स्टॉफ सहित इस कार्य में लगे सभी वॉलंटियर्स की जिस तरह से हौसला अफजाई व मनोबल को बनाये रखा गया उससे स्थितियां बेहतर होती गईं। देखा जाए तो भीलवाड़ा मॉडल को इस रूप में देखा जाना चाहिए कि प्रशासन, पुलिस और चिकित्सा स्वास्थ्य के साथ जिस तरह का बेहतरीन तालमेल बनाया गया और उच्च स्तर पर स्वयं मुख्यमंत्री अशोक गहलोत द्वारा समूचे प्रदेश के साथ भीलवाड़ा की मॉनिटरिंग करते हुए स्थितियों पर नजर रखी गई, निर्देश दिए गए और फील्ड में उनकी पालना हुई उसी का परिणाम है कि भीलवाड़ा आज रोल मॉडल के रूप में सामने आया है। केन्द्र और राज्य सरकार की एडवाइजरी की सख्ती से पालना का ही परिणाम है कि देश का मैनचेस्टर कहलाने वाला भीलवाड़ा आज आधार केंद्र से निकल कर मॉडल के रूप में उभर कर आया है।

कोरोना वायरस पर विजय पाने में जिस तरह से भीलवाड़ा ने प्रयास किए हैं आज सारी दुनिया के सामने यह प्रयास भीलवाड़ा मॉडल के रूप में उभर कर आया है। शुरुआत दौर में ही भीलवाड़ा के एक निजी अस्पताल के चिकित्सक की मामूली भूल बड़े संकट का कारण बन गई थी और जिस तरह से शुरुआती दौर में भीलवाड़ा इसका केंद्र बनकर उभरा और समूचे देश ने भीलवाड़ा की ओर कातर दृष्टि से देखना आरंभ किया ठीक उसी समय से राजस्थान के मुख्यमंत्री अशोक गहलोत की सघन निगरानी और समन्वय का परिणाम रहा कि स्थानीय प्रशासन के समन्वित प्रयासों से भीलवाड़ा आज समूचे देश के सामने रॉल मॉडल के रूप में उभर कर आया है।

दरअसल देखा जाए तो भीलवाड़ा ने सुरक्षा मापदण्डों को कड़ाई से लागू करने के साथ ही योजनाबद्ध तरीके से इस संकट से समूचे जिले और प्रदेश को संक्रमित होने से बचाने के कारगर प्रयास किए। जहां एक और मुख्यमंत्री अशोक गहलोत समूचे प्रदेश के साथ ही भीलवाड़ा की स्थिति की करीबी निगरानी में जुटे रहे वहीं राज्य के स्वास्थ्य विभाग, गृह विभाग व आपदा प्रबंधन विभाग और स्थानीय प्रशासन में समन्वय का अनूठा उदाहरण देखने को मिला। दरअसल कोरोना वायरस के कारण उत्पन्न स्थिति से निपटने के लिए जिस तरह की रणनीति अपनाई गई वह अपने आप में कारगर सिद्ध हुई। यही कारण है कि केन्द्रीय कैबिनेट सचिव राजीव गौबा आज भीलवाड़ा को पूरे देश में रोल मॉडल के रूप में देख रहे हैं।

कोरोना वायरस की भयावहता को नकारा नहीं जा सकता। देश के लगभग सभी प्रदेश लॉक डाउन के दौरान कोरोना के खिलाफ किलेबंदी में जुट गए हैं। राजस्थान के मुख्यमंत्री अशोक गहलोत ने समय रहते कोरोना की भयावहता को समझा और उसी का परिणाम रहा कि भारत में सबसे पहले

राजस्थान की सरकार ने 31 मार्च तक के लिए लॉकडाउन की घोषणा की और बाद में समूचे देश में इसे 14 अप्रैल तक बढ़ा दिया गया।

राजस्थान की पहल को देखते देखते देश के अन्य राज्य भी लॉकडाउन घोषित कर कोरोना को तीसरे स्टेज पर पहुंचने से रोकने के लिए एकजुट हो गए। दरअसल भीलवाड़ा के एक निजी हास्पिटल के चिकित्सक की गलती ने इसे कोरोना जोन बना दिया था पर मुख्यमंत्री अशोक गहलोत के नेतृत्व में सरकार और मशीनरी जिस तेजी से जुटी उससे यहां भी कोरोना पर विजय पा ली गई और संतोष की बात यह है कि अब भीलवाड़ा में नया प्रकरण सामने नहीं आ रहा है।

दरअसल कोरोना से बचाव के लिए दूसरे के संपर्क में नहीं आना जरूरी है। प्रधानमंत्री नरेन्द्र मोदी के आह्वान पर जिस तरह से 22 मार्च को समूचा देश तालियां, घंटे-घड़ियाल, थाली-लोटा बजाने लगा वह सामूहिक एकता और समर्पण का उदाहरण है पर कुछ उत्साही लोगों द्वारा 22 मार्च को पांच बजे ही एकत्रित होकर जश्न जैसा माहौल बना देना गंभीर हो जाता है। ठीक इसी तरह से प्रधानमंत्री नरेन्द्र मोदी की एक आवाज पर समूचे देश में ही नहीं अपितु विदेशों में भी 5 अप्रैल को रात 9 बजे 9 मिनट के लिए घरों की लाइट बंद कर मोमबत्ती, दीपक, मोबाइल की लाइट आदि जला कर एकजुटता और कोरोना संघर्ष में जुटे डॉक्टर्स, पैरामेडिकल स्टॉफ व वॉलंटियर्स के सम्मान में दीपावली जैसा माहौल बना दिया गया वह हमारी सामूहिक मानसिकता को दर्शाता है। हालांकि आलोचना प्रत्यालोचना और पटाखे छोड़ने को अतिउत्साहित कदम भी बताया जा रहा है पर खास बात यह है कि आज कोरोना के खिलाफ संघर्ष में सारी दुनिया एक हो चुकी है।

कोरोना वायरस के संक्रमण को रोकने का आइसोलेशन ही रोकथाम का एकमात्र विकल्प है। कमोबेश देश के सभी राज्यों में गंभीर कदम उठाए जा रहे हैं। मुख्यमंत्री की संवेदनशीलता और गंभीरता को इसी से समझा जा सकता है कि जहां वीडियो कॉन्फ्रेंसिंग के माध्यम से जिला कलेक्टरों से फीडबैक लेने के साथ ही आवश्यक दिशा-निर्देश दे रहे हैं वहीं स्वयं देर रात तक प्रतिदिन उच्चस्तरीय बैठकें कर प्रशासन को सक्रिय व व्यवस्थाओं को चाकचौबंद करने में जुटे हैं। सबसे अच्छी बात यह कि राजनीति से ऊपर उठकर केन्द्र व राज्यों में बेहतर समन्वय बनाया गया है।

इसमें कोई दो राय नहीं कि कोरोना महामारी ने सारी दुनिया को हिला कर रख दिया है। लगता है नया साल दुनिया के लिए महामारी का प्रकोप लेकर आया और मार्च आते-आते समूची दुनिया को कोरोना महामारी ने अपने गिरफ्त में ले लिया। चीन से आरंभ कोरोना महामारी ने सारी दुनिया को हिला कर रख दिया है। चीन के साथ ही इटली, स्पेन, फ्रांस, जर्मनी, ईरान, टर्की, इंग्लैंड आदि में जहां गंभीर स्थिति हो गई वहीं विश्व की महाशक्ति अमेरिका भी आज सबसे गंभीर संकट में आ गया है। अमेरिका में सबसे ज्यादा 3 लाख 11 हजार से अधिक लोग संक्रमित मिले हैं। दुनिया के 194 देश कोरोना की चपेट में आ गए हैं और एक मोटे अनुमान के अनुसार 12 लाख 18 हजार से अधिक संक्रमण के मामले सामने आ चुके हैं और कोरोना वायरस के कारण 65 हजार 841 लोग मौत के आगोश में आ गए हैं। दरअसल लॉकडाउन की सख्ती से पालना करने के लिए सरकार को नहीं आम आदमी को आगे आना होगा। जर्मनी में तो दो से अधिक लोगों के एकत्र होने पर ही रोक लगा दी गयी है। यह इसकी भयावहता को दर्शाता है। यही कारण है कि मुख्यमंत्री अशोक गहलोत ने सचेत किया है कि लॉकडाउन को ही कर्फ्यू मानकर चलें नहीं तो सरकार को इससे भी कड़े कदम उठाने

जिस तरह से आज सारी दुनिया कोरोना महामारी से निजात पाने के लिए एकजुट हो गई है और जिस तरह से कोरोना ने सारी दुनिया को बांध के रख दिया है वास्तव में यह सोचनीय इस मायने में हो जाता है कि सिवाय आइसोलेशन या यों कहे कि सोशल डिस्टेंस और सेनेटाइजिंग व संपर्क विहीनता की स्थिति का कोई विकल्प नहीं दिख रहा है। जल्दी ही इस महामारी से निपट लिया जाएगा पर अब वैज्ञानिकों के लिए भी नई चुनौती उभर कर आएगी कि इस तरह की महामारी से निपटने का कोई रोडमैप बन सके। खैर अभी तो देश के अन्य स्थानों पर भी राजस्थान के भीलवाड़ा जैसी दक्षता दिखानी होगी तभी सकारात्मक परिणाम प्राप्त हो सकेंगे। पूरा देश ही नहीं अपितु समूची दुनिया जिस रणनीति, संवेदनशीलता और गंभीरता के साथ जुटी है और जिस तरह से धरती के भगवान अपनी पूरी टीम के साथ सेवा में जुटे हैं उसमें हमारी भागीदारी केवल और केवल निर्देशों की पालना करने और घर में ही अपने परिवार के साथ रहकर सजग नागरिक का दायित्व पूरा करना होगा। हमारी जरा-सी लापरवाही कितना विकराल रूप ले सकती है इसे हमें समझना होगा।

कवर स्टोरी

रवि कुमार

तबलीकी जमान को सऊदी अरब और ईरान जैसे मुस्लिम मुल्कों में प्रतिबंधित किए जाने के बाद भी भारत में इसकी गतिविधियों पर बैन लगना तो दूर की बात है बल्कि देश की राजधानी दिल्ली के भीतर भारत सरकार की हद में इसका अंतरराष्ट्रीय मुख्यालय है व अनेक वर्षों से इसमें गतिविधियाँ सुचारु रूप से चल रही है।

कोरोना के खिलाफ चल रहे अभियार में भारत संयव व सावधानी के साथ आगे बढ़ रहा है। देश के स्वास्थ्य मंत्रालय के हालियाँ आंकड़े दर्शाते हैं कि देश में कोरोना से पीडित व्यक्ति की संख्या में वृद्धि होने की दर कम हुई है। यह संख्या अब 7.5 दिवस में दुगुनी हो रही है। कोरोना से इस लड़ाई के दौरान निजामुद्दीन में तब्लीगी जमात का मरकज़ सबसे कमजोर कड़ी साबित हुआ है इस बात में अब कोई संदेह नहीं है। शायद इसी कारण से यह संगठन जिसके नाम और गतिविधियों से अब तक देश के सामान्यतः अधिकतर लोग परिचित नहीं थे आज उसका नाम और उनके कारनामों देश की सुरक्षा एजेंसियों से लेकर सभी की जुबां पर हैं।

विश्व के अनेक देशों की खुफिया एजेंसियों की नज़र काफी पहले से इनकी गतिविधियों पर थीं। बहुत समय पहले से ही इन पर विभिन्न देशों में होने वाली आतंकवादी गतिविधियों में अप्रत्यक्ष रूप से शामिल होने के आरोप लगे रहे हैं। इन्हीं पर अल कायदा, हरकत उल मुजाहिदीन, तालिबान जैसे आतंकवादी गतिविधियाँ चलाने वाले संगठन के लिए भटके हुए युवाओं की भर्ती करने के आरोप हैं। अमरीकी खुफिया एजेंसी स्टेटफॉर ने जब 9/11 के हमले की जांच की थी तो इस जांच की जिसमें शक की सुई भी तब्लीगी जमात तक भी पहुंची थी। आश्चर्य की बात है कि विभिन्न आतंकवादी संगठनों को परोक्ष रूप से मदद करने के आरोपों के बावजूद इस जमात की जड़ें विश्व के लगभग 150 देशों तक फैल चुकी हैं लेकिन आश्चर्य की बात है कि यह है कि सऊदी अरब और ईरान जैसे मुस्लिम मुल्कों में इसे प्रतिबंधित किए जाने के बाद भी भारत में इसकी गतिविधियों पर प्रतिबंध लगना तो दूर की बात है बल्कि भारत की राजधानी दिल्ली के भीतर भारत सरकार की हद में इसका अंतरराष्ट्रीय मुख्यालय है।

जब तक विधि के प्रावधान या कानून के तहत यह सिद्ध नहीं हो जाता कि तब्लीगी जमात के आतंकवादियों से किसी भी प्रकार के संबंध हैं तब तक स्पष्ट रूप से कुछ नहीं कहा जा सकता है। कोरोना संकट के इस काल में तब्लीगी जमात के लोगों के अमर्यादित आचरण पर तो किसी प्रकार

मुस्लिम युवाओं को कट्टर बना रहा है तब्लीगी जमात

की असहमति का सवाल ही नहीं उठता। सरकार के दिशा-निर्देशों की धज्जियाँ उड़ाना हो, या स्वास्थ्य कर्मियों के साथ मारपीट या थुके जाने का मामला हो, पुलिस कर्मियों पर पथराव और हिंसा का तांडव हो अथवा ऐसे कार्य करना जिससे यह कोरोना बीमारी फैले यह सब कार्य यही जमात बखूबी से कर रही है ऐसा लगता है। वैसे तब्लीगी जमात के मौलाना साद के कई आडियो/वीडियो सामने आने के बाद तब्लीगी जमात के लोगों के इस आचरण पर ज्यादा आश्चर्य करने का औचित्य नहीं रह जाता लेकिन इंसानियत के दुश्मन ऐसे लोगों पर केन्द्र और राज्य

अंसारी ने तब्लीगी जमात की गतिविधियों के चलते उन पर देशद्रोह का मुकदमा दर्ज करने की मांग रखी है। वहीं शिया वक्फ बोर्ड के चेयरमैन वसीम रिज़्वी का का विचार है कि यह दुनिया की सबसे खतरनाक जमात है। यह मुसलमानों का ऐसा समूह है जो पूरी दुनिया में इस्लाम के प्रचार के नाम पर मुसलमान युवाओं को कट्टरपंथी बनाता है।

उत्तर प्रदेश के अल्पसंख्यक कल्याण राज्यमंत्री मोहसिन रज़ा ने भी तब्लीगी जमात पर प्रतिबंध लगाने की मांग करते हुए कहा कि जमात ने भारत व समाज विरोधी मानसिकता का परिचय दिया है। बरेली की दरगाह आला हजरत ने सरकार से तब्लीगी जमात पर कानूनी कार्यवाही



सरकार द्वारा कठोर कार्यवाही करने में राजनैतिक इच्छाशक्ति की कमी दिखाना अवश्य आश्चर्यजनक लगता है। ऐसे संगठनों पर कार्यवाही ना कर पाने की सरकारों की अपनी अपनी राजनितिक मजबूरियाँ हो सकती हैं लेकिन इन्हीं मजबूरियों से समाज के भीतर से आक्रोश के स्वर भी उभरने लगे हैं। तब्लीगी जमात के साथ भी कुछ ऐसा ही हुआ। देश के मुस्लिम समाज के भीतर से ही जमात के विरोध में आवाजें उठने अब उठने लगीं। बाबरी मस्जिद के पक्षकार रहे इकबाल

करने की मांग की। शिया धर्म गुरु भी तब्लीगी जमात पर प्रतिबंध लगाने की मांग कर रहे हैं। अनेक संगठन इन पर कार्यवाही की मांग कर रहे हैं।

समाज के कतिपय फिल्म उद्योग से जुड़े विभिन्न मुस्लिम लोग जो समाज में अपनी पेढ रखते हैं जैसे अब्बास टायरवाला और सलमान खान भी जमातियों के बारे में खुलकर बोल रहे हैं और देश के हर मुसलमान को घर पर ही नमाज़ पढ़ने के साथ सोशल डिस्टेंसिंग की सरकार के दिशा-निर्देशों का पालन करने के



लिए कह रहे हैं। लेकिन अब रमजान के महीने और तब्लीगी जमात के इतिहास को

यह तो स्पष्ट है कि तब्लीगी जमात इस देश के मुसलमान की पहचान नहीं है। क्योंकि तब्लीगी जमात का आतंकवाद कनेक्शन है या नहीं यह तो समय ही बताएगा लेकिन यह तो प्रमाणित होता है कि यह संगठन कट्टरता को बढ़ावा देना है उसका मकसद जरूर है। और जहाँ कट्टरता आती है वहाँ उदारता का का दायरा बहुत ही छोटा हो जाता है, यहाँ तक कि ज्ञान और विज्ञान के सभी मार्गबंद हो जाते हैं। इनकी सोच के साथ पहचान का दायरा बहुत संकुचित हो जाती है। इनकी सोच ही इनके विचार को जन्म देती है, यह विचार ही शब्दों को गढ़ते हैं, यह शब्द हमारा आचरण बनते हैं और आचरण ही हमारा चरित्र बताते हैं। अतः यह समझना है कि तब्लीगी जमात ने अपनी इसी तरह की पहचान रूढ़ीवादीता वाले एवं अर्धविश्वास वाले चरित्र से स्वयं बनाई है और यह पहचान इस देश के हर मुसलमान की हो नहीं सकती। इस देश के मुसलमान जिसमें अशाफाकउल्ला खान, अब्दुल हमीद, अब्दुल कलाम आजाद, बिस्मिल्लाह खान जैसे नाम हैं जिनके बिना हिंदुस्तान वो नहीं होता जो वो आज है। आज की परिस्थितियों

से जब भारत आगे बढ़ रहा है और 21वीं सदी की बातें कर रहा है, विश्व में एक मुकाम प्राप्त करने के सपने देख रहा है तो वहाँ कट्टरता और संकीर्णता मानसिकता का कोई स्थान नहीं है। आज मुस्लिम समाज ही नहीं देश को भी ऐसे पढ़े लिखे युवा मुस्लिम नेतृत्व की जो उदारवादी होने के साथ ही आधुनिक समय की परिस्थितियों से सामंजस्य बैठाते हुए सही मायनों में धर्मनिरपेक्ष रूप से इस्लाम का सही स्वरूप देश और दुनिया के सामने लाए उनकी आवश्यकता है।

जब भारत में कोरोना वायरस जैसी महामारी से जूझ रहा है, ऐसे वक्त में कुछ संस्थाएं ऐसी हैं जिन्हें यह 'युद्ध' फूटी आंख नहीं सुहा रहा है। कुछ संस्थाओं एवं उनके लोग यह सिद्ध करने में लगे हैं कि देश इस वायरस से लड़ने के लिये समुचित कदम नहीं उठा रहा है।

केन्द्र सरकार हो या उत्तरप्रदेश सरकार और प्रशासन भी कई बार सूचित किये जाने के बावजूद अब भी राज्य के कई हिस्सों में तबलीकी जमातियों ने अपने आप को छिपे छिपा रखा है और इसकी जानकारी नहीं दे रहे हैं। इस बात जब भी हुई जब जब प्रयागराज पुलिस ने एक मस्जिद के अन्दर जमातियों के छिपे होने के समाचार मिलने के बाद मस्जिद से 30 जमातियों को अपनी अभिरक्षा में लेकर उन्हें गिरफ्तार किया, जिसमें कई विदेशी तललीकी जमाती भी थे। सबसे चौंकाने वाला तथ्य यह था कि इन जमातियों को एक शिक्षाविद् ने ही मस्जिद में संरक्षण की घटना को बखुबी अंजाम दिया था। इससे यह स्पष्ट हो जाता है कि जमाती सिर्फ देश के खिलाफ ही नहीं हैं, इसमें पढ़े लिखे, उच्च संवैधानिक पदों पर विराजमान हस्तियों के अलावा फिल्म, साहित्य, राजनीति, समाज सेवक का तमगा लगा कर घूमने वाले लोग भी शामिल हैं। यह वह लोग हैं जो किसी भी प्रकार का मौका मिलते ही बारीशी मेंढक की तरह बाहर निकल कर शोर करते हैं और फिर समय आने पर फिर छिप जाता है। जब उच्च शिक्षित वर्ग और समाज में अच्छी प्रतिष्ठा प्राप्त ऐसे लोग अपनी इसी दकीयासूनि मानसिकता बदल ही नहीं पा रहे हैं। यह 'जमाती' उन मुख्य जमातियों से देश के लिए ज्यादा बड़ा संकट हैं जो अपनी जमाती विचारधारा को छिपा कर भारत की गंगा-जमुनी संस्कृति को क्षति पहुंचा रहे हैं।

लिबरल समूह की लिस्ट काफी लम्बी है जिसमें हमारे देश के पूर्व उप-राष्ट्रपति हमिद अंसारी, गीतकार जावेद अख्तर, फिल्मी अदाकार नसीरुद्दीन शाह, आमिर खान, शाहरुख खान, स्वरा भास्कर, अनुराग कश्यप, मशहूर शायर मुनव्वर राणा जैसे अनेकों लोग शामिल हैं। जब देश या देश की बहुसंख्यक लोगों की आबादी के पर आक्रमण किया जाता है तो अपना चुप्पी साध लेते हैं लेकिन जब सरकार की अधिकृत एजेंसी देश के विरुद्ध एनैतिक कार्य करने वाले, आतंकवादियों, भारत के टुकड़े होंगे



कहने व नारे लगाने वाले लोगों के खिलाफ कार्यवाही करती है तो यह पूरे देश में शोक मनाकर अपना आक्रोश जाहिर कर अपनी पीड़ा को दर्शाते हैं जैसे उनके खिलाफ बहुत ही बड़ी कार्यवाही हो गई। ऐसा ही आज की परिस्थितियों हो रहा है, जब भारत देश को कोरोना महामारी से बचाने के लिए केन्द्र की मोदी और राज्यों की सरकारें एकजुट होकर कार्य कर रही हैं तब कुछ लोग इन कोरोना वीरों के ऊपर बदतमिजी भी कर रहे हैं और थूक रहे हैं। उनके साथ मारपीट कर पत्थर बरसा रहे हैं। मोदी-योगी को गालियाँ दे रहे हैं, लेकिन कथित बुद्धिजीवी वर्ग जिसे गैंग कहा जाएगा वे मौन तोड़ने को तैयार ही नहीं हैं।

जब देश कोरोना वायरस जैसी भयानक आपदा से जूझ रहा है, ऐसे समय में कुछ इकाइयाँ ऐसी हैं जिन्हें भारत का कोरोना वायरस के विरुद्ध छेड़ा गया यह 'महामारी अभियान' से वे खुश नहीं हैं कुछ लोग यह सिद्ध करने में लगे हैं कि भारत इस वायरस के प्रकोप से बचाव के लिये उपयुक्त कार्यवाही नहीं कर रहा है। इन तथाकथित बुद्धिमानों का कहना है कि सरकार लोगों को धोखा दे रही है। इसके साथ ही कुछ स्वयंभू लोगों जिन्हें इन दिनों अपनी राजनीति को चमकाने के लिये कोरोना प्रकोप में भी साम्प्रदायिकता नजर आ रही है। इस देश विरोधी गतिविधियों में भारत के मीडिया ग्रुप भी शामिल हैं। कुछ लेफ्ट लिबरल मीडिया तो कोरोना जैसी महामारी पर अपनी रिपोर्ट में पत्रकारिता की सारी सीमायें ही लांघ गया है दोष उनका नहीं है क्योंकि उनके मालिक उन्हें यह करने के लिये बाध्य कर रहे हैं। मोदी विरोधी मीडिया इस समय जितने भी समाचार या न्यूज़ का प्रकाशन या प्रसारित कर रहा है, सभी अनुमान व अटकलों पर आधारित है। इन्हीं अनुमान के सहारे जनता में घबराहट फैलाने की कोशिश

की जा रही है। जैसे इस मीडिया यह समाचार फैलाया जा रहा है कि भारत में एक मिलियन से भी अधिक लोगों को कोरोना वायरस होने की संभावना है। भारत में प्रायः बहुत कम टेस्टिंग हो रही है, इसीलिये ऐसे कई कोरोना वायरस के केसेज होंगे जिनकी जांच पड़ताल का पता नहीं चल पाया है फिर कैसे भारत में कोरोना वायरस का कम्युनिटी ट्रांसमिशन फैलना शुरू हो चुका है। हालात यह हैं कि प्रधानमंत्री मोदी द्वारा जब एक रविवार को कोरोना से देश को बचाने वालों का सम्मान करने के लिए ताली बजाने और शंखनाद करने का आह्वान किया गया तो लिबरल गैंग इसमें भी राजनीति तलाशने लगा। लेफ्ट लिबरल गैंग ने प्रधानमंत्री की इस अच्छी पहल का भी मजाक बनाया। तालियां बजने के कुछ देर बाद से ही वाट्सअप एवं फेसबुक से की गई पोस्ट से यह दर्शाया जाने लगा कि तालियों और शंखनाद से जबर्दस्त वायु प्रदूषण हुआ। लिबरल गैंग के समर्थन वाली मीडिया ने तुरंत इस प्रकार की समाचार का प्रचार-प्रसार करना शुरू कर दिया कि ताली बजाना पर्याप्त नहीं है, सरकार को आम आदमी की

सुरक्षा के लिये अच्छे कदम उठाने होंगे। मीडिया का एक छोटा-सा धड़ा यह मानने को तैयार ही नहीं है कि जब कोई भी देश स्वास्थ्य से जुड़ी किसी आपतकालीन स्थिति से गुजर रहा होता है, तो मीडिया संस्थाओं की भी कुछ सीमाएं होती हैं कि वो केवल सत्य और तथ्यों के आधार पर जो घटना घटी है उसका सही प्रसारण करे और उसे समाज में अच्छा संदेश दे।

जब बात पढ़े-लिखे जमातियों की हो रही है तो यहां इलाहाबाद विश्वविद्यालय के एक प्रोफेसर की कारनामों की चर्चा करना जरूरी है। कुछ दिन पूर्व प्रयागराज में 30 जमातियों को एक मस्जिद से गिरफ्तार करके क्वारंटीन किया गया तो कई लोग यह सुनकर हैरान हो गए कि क्वारंटीन किए गए जमातियों में यही इलाहाबाद विश्वविद्यालय के प्रोफेसर साहब भी शामिल थे। प्रोफेसर के साथ 16 विदेशी समेत कुल 30 जमाती शामिल थे। विदेशियों की गिरफ्तारी फॉरेनर्स एक्ट के तहत की गई, जबकि इलाहाबाद विश्वविद्यालय प्रोफेसर के खिलाफ विधि अनुसार जमातियों को गुप्त रूप से शहर में

शरण दिलाने के आरोप में और महामारी एक्ट के तहत मुकदमा दर्ज किया गया है।

इससे पहले प्रयागराज में ही शाहगंज के काटजू रोड के पास स्थित अब्दुल्लाह मस्जिद मुसाफिरखाने में इंडोनेशिया के सात नागरिकों समेत नौ लोग पकड़ में आये थे। यह सभी दिल्ली के निजामुद्दीन मरकज में आयोजित तबलीगी जमात के प्रायोजित कार्यक्रम में शामिल हुए थे। ठीक इसी तरह करेली के हेरा मस्जिद में थाईलैंड के 9 लोगों समेत कुल 11 जमाती मिले थे। शाहगंज व करेली थाने में मुकदमा दर्ज कर इन सभी को क्वारंटीन कर दिया गया था। पुलिस को सूत्रों से मिली जानकारी पर शिवकुटी के रसूलाबाद में रहने वाले इलाहाबाद विश्वविद्यालय के राजनीति विज्ञान विभाग के प्रोफेसर भी दिल्ली में आयोजित तबलीगी जमात के जलसे में शामिल होकर लौटे और चुपचाप शहर में रह रहे हैं। इसके बाद उन्हें भी परिवार समेत क्वारंटीन कर दिया गया था। विदेशी जमातियों के साथ दिल्ली से लौटे उनके चार सहयोगियों और करेली की हेरा मस्जिद व शाहगंज में अब्दुल्लाह मस्जिद मुसाफिरखाना के 9 अन्य लोगों को भी क्वारंटीन किया गया था।

अब कहने का तात्पर्य सिर्फ इतना है कि एक और जमाती और कुछ मसखरे धर्म की आड़ लेकर कोरोना की लड़ाई को कमजोर करने में लगे हैं और हर बात पर पर समाज में भय का वातावरण बनाने वाले लिबरल गैंग जमातियों की हरकतों की तरफ से खामोशी अख्त्यार किये हैं। इसी प्रकार सीएए के विरोध पर दिल्ली के शाहीन बाग से लेकर देश में अराजकता फैलाने पर इसी गैंग चुप्पी साधे यह देख रहा होगा कि मोदी कैसे कोरोना महामारी से निपटेंगे। अगर कहीं भी जरा सी भी कोई कमी दिखाई देती है तो यह गैंग सक्रिय हो जाएगा।

जमातियों पर लिबरल गैंग की लंबी चुप्पी



मीडिया का एक छोटा-सा धड़ा यह मानने को तैयार ही नहीं है कि जब कोई भी देश स्वास्थ्य से जुड़ी किसी आपतकालीन स्थिति से गुजर रहा होता है, तो मीडिया संस्थाओं की भी कुछ गरिमा होती है कि वो सिर्फ तथ्यों के आधार पर जो घटित हो रहा है, उसी खबर को आगे बढ़ाएं।

भारतीय दवा उद्योग के विकास में केन्द्र सरकार की नीतियां भी महत्वपूर्ण भूमिका अदा कर रही हैं। भारतीय कंपनियों द्वारा विदेशी दवा कंपनियों के अधिग्रहण सख्ती नियमों को आसान बनाया गया है जिसके फलस्वरूप, भारतीय दवा उद्योग ने 2017 में 1.47 अरब अमेरिकी डॉलर मूल्य की 46 छोटी-बड़ी विदेशी दवा कंपनियों का अधिग्रहण एवं विलय किया था। इससे अमेरिका समेत दुनिया के अन्य देशों में भारतीय दवा उद्योग का निर्यात बढ़ाने में मदद मिली है। उम्मीद है भारतीय दवा उद्योग साल 2020 तक विश्व के शीर्ष तीन दवा बाजारों में और मूल्य के लिहाज से 6वां सबसे बड़ा आकार वाला देश होगा। केन्द्र सरकार के फार्मा विजन 2020 का मकसद भारत के दवा उद्योग को विश्व में मुख्य स्थान दिलाना है। फार्मा विजन को प्रभावी बनाने के लिये अनुसंधान एवं इनोवेशन पर काफी ध्यान दिया जा रहा है।

अब दवाओं के लिए भी दुनिया भारत पर निर्भर

प्रसारक सचवाती



भारत जेनेरिक दवाओं के मामले में विश्व में काफ़ी आगे है। दरअसल जेनेरिक दवाओं की ब्रांडेड संरचना ब्रांडेड दवाओं के अनुसार ही होती है। लेकिन वो रासायनिक नामों से ही बेची जाती है ताकि जनता को कोई उलझन न रहे।

विश्व के सबसे शक्तिशाली देश अमेरिका के राष्ट्रपति डोनाल्ड ट्रम्प ने भारतीय प्रधान मन्त्री नरेन्द्र मोदी एवं भारतीय जनता का अभी हाल ही में आभार प्रकट किया है क्योंकि भारत ने अमेरिका को कोरोना वायरस को नियन्त्रित करने हेतु हाइड्रोक्सीक्लोरोक्वाइन नामक दवा प्रचुर मात्रा में उपलब्ध कराई है। यह दवा ब्राजील एवं श्रीलंका के साथ ही विश्व के कई अन्य देशों को भी उपलब्ध कराये जाने पर इन देशों के राष्ट्रपतियों ने भी भारत का आभार जताया है। दवा क्षेत्र में भारत आज विश्व में कई विकसित देशों से भी बहुत आगे निकल आया है। यह सब अचानक नहीं हुआ है। भारत को, दवा क्षेत्र में, विश्व में प्रथम पंक्ति में ला खड़ा करने के पीछे केन्द्र सरकार की कई योजनाओं की मुख्य भूमिका रही है। आप यह जानते ही हैं कि स्वास्थ्य, दुनिया के सामाजिक और आर्थिक विकास में सर्वोपरि महत्व का क्षेत्र है। यही वजह है कि दवा उद्योग को आर्थिक विकास की प्रक्रिया में एक प्रमुख उद्योग के रूप में भी देखा जाता है। भारतीय दवा उद्योग वैश्विक फार्मा सेक्टर में एक उल्लेखनीय स्थान हासिल कर चुका है और हाल के वर्षों में इसमें उल्लेखनीय विकास हुआ है।

नवम्बर एवं दिसम्बर 2019 में जब चीन में कोरोना वायरस फैला था तब यह अनुमान लगाया जा रहा था कि कोरोना वायरस को लेकर चीन के हालात अगर शीघ्र ही बेहतर नहीं हुए तो इसका असर भारत के दवा उद्योग पर पड़ सकता है क्योंकि, भारतीय दवा उद्योग के लिये कच्चा माल विशेष रूप से चीन से ही आता है। सक्रिय औषधि अवयवों (Active Pharmaceutical Ingredients - API) के लिये भारतीय कंपनियां विशेष रूप से चीन पर ही निर्भर हैं। सक्रिय औषधि अवयव वो दवा रसायन है जो, भारतीय औषधि उद्योग, दवाईयां बनाने के लिये इस्तेमाल करता है। भारत के और अन्य लवणों के कुल आयात में चीन की 65 से 70 प्रतिशत हिस्सेदारी है। आईसीआरए के मुताबिक भारत कुछ विशेष

दवाओं जैसे पेरासिटामोल, आदि दवाओं के रसायनों के लिये तो 80 से 90 प्रतिशत आयात पर निर्भर है। कोरोना वायरस से दुनिया के दवा उद्योग पर भारी असर पड़ा है।

अगर चीन से कारोबार की बात की जाये तो देश में जितने भी एन्टीबायोटिक्स, स्टीरॉइड्स एवं मूलभूत जीवन रक्षक औषधियां निर्मित होती हैं, इनका रसायन भारत, चीन से आयात होता है। ऐसा नहीं है कि देश का फार्मा उद्योग मुस्तैद नहीं है। भारत में भी ये रसायन बनाये जा सकते हैं। यदि चीन से इनका आयात पूरी तरह से बन्द हो जाये तो भारत किसी भी हालात से निपटने में सक्षम है। वर्तमान हालातों से निपटने के लिये तो भारत सरकार ने फौरी तौर पर कई जरूरी दवाओं, जिनमें मूलभूत जीवन रक्षक दवाएं भी शामिल हैं, पर भारत से निर्यात पर रोक लगा दी है।

भारतीय दवाओं का कारोबार बहुत तेजी से बढ़ रहा है। इसके पीछे मुख्य कारण है भारतीय दवाओं की गुणवत्ता एवं भारतीय कंपनियों की साख। भारतीय कंपनियों ने विदेशी दवा बाजार में अपनी मजबूत उपस्थिति दर्ज की है। आकार के हिसाब से भारत दुनिया का तीसरा सबसे बड़ा दवा बाजार है। वहीं कीमत के लिहाज से भारत दुनिया का 13वां सबसे बड़ा दवा बाजार है। दुनिया में बीमारीयों के टीकों की 50 प्रतिशत मांग भारतीय दवाइयों से पूरी होती है। अमेरिका में दवाओं की 40 प्रतिशत पूर्ति भारतीय दवाओं से होती है। वहीं ब्रिटेन में कुल दवाओं की 25 प्रतिशत पूर्ति भारतीय दवाओं से होती है। आज भारतीय फार्मा उद्योग का कुल आकार लगभग 40 अरब अमेरिकी डॉलर का हो गया है। 2015-2020 के बीच भारतीय दवा उद्योग के 22.4 प्रतिशत की वृद्धि दर के साथ आगे बढ़ने की सम्भावना व्यक्त की गई है। भारत से 200 देशों को दवायें निर्यात की जा रही हैं। भारत से वर्ष 2017-18 में 17.27 अरब अमेरिकी डॉलर के मूल्य की दवाओं का निर्यात किया गया था जो वर्ष

2018-19 में बढ़कर 19.14 अरब अमेरिकी डॉलर एवं वर्ष 2019-20 में 22 अरब अमेरिकी डॉलर हो जाने की सम्भावना है।

वर्ष 2017 में एसएफडीए ने भारतीय कंपनियों के 304 नये दवा आवेदनों को मंजूरी दी थी। इससे अमेरिकी जेनेरिक दवाओं के 70-80 अरब अमेरिकी डॉलर के बाजार में भारतीय जेनेरिक दवाओं की मौजूदगी 30 प्रतिशत और भारतीय दवाओं का मुनाफा 10 प्रतिशत बढ़ने की उम्मीद है। इसके अलावा बायो मेडिसिन, बायो सर्विस, जैव कृषि, जैव उद्योग और बायो इन्फोर्मेशन के क्षेत्र के कुल मिलाकर 30 प्रतिशत विकास के साथ वर्ष 2025 तक 100 अरब अमेरिकी डॉलर तक पहुंचने की उम्मीद की जा रही है।

भारतीय कंपनियों को विदेशों में यदि जेनेरिक दवाओं के निर्यात की इजाजत नहीं मिलती है तो वे वहां की स्थानीय कंपनियों को खरीद लेती हैं और अपनी पैट इन देशों में बना लेती हैं क्योंकि जेनेरिक ब्रांडेड दवाएं तुलनात्मक रूप से बहुत सस्ती होती हैं। भारतीय दवा उद्योग के विकास में केन्द्र सरकार की नीतियां भी महत्वपूर्ण भूमिका अदा कर रही हैं। भारतीय कंपनियों द्वारा विदेशी दवा कंपनियों के अधिग्रहण सम्बंधी नियमों को आसान बनाया गया है जिसके फलस्वरूप, भारतीय दवा उद्योग ने 2017 में 1.47 अरब अमेरिकी डॉलर मूल्य की 46 छोटी-बड़ी विदेशी दवा कंपनियों का अधिग्रहण एवं विलय किया था। इससे अमेरिका समेत दुनिया के अन्य देशों में भारतीय दवा उद्योग का निर्यात बढ़ाने में मदद मिली है। उम्मीद है भारतीय दवा उद्योग साल 2020 तक विश्व के शीर्ष तीन दवा बाजारों में और मूल्य के लिहाज से 6वां सबसे बड़ा आकार वाला देश होगा। केन्द्र सरकार के फार्मा विजन 2020 का मकसद भारत के दवा उद्योग को विश्व में मुख्य स्थान दिलाना है। फार्मा विजन को प्रभावी बनाने के लिये अनुसंधान एवं इनोवेशन पर काफी ध्यान दिया जा रहा है।

ग्रीन फील्ड फार्मा परियोजनाओं के लिये ऑटोमेटिक रूट के अन्तर्गत 100 प्रतिशत प्रत्यक्ष विदेशी निवेश की अनुमति दी जा चुकी है। जब कि ब्राउन फील्ड फार्मा परियोजनाओं में ऑटोमेटिक रूट के तहत 74 प्रतिशत प्रत्यक्ष विदेशी निवेश की अनुमति दी गई है। 74 प्रतिशत प्रत्यक्ष विदेशी निवेश से अधिक की राशि के लिये सरकारी अनुमति की आवश्यकता रखी गई है।

भारत जेनेरिक दवाओं के मामले में विश्व में काफ़ी आगे है। दरअसल जेनेरिक दवाओं की ब्रांडेड संरचना ब्रांडेड दवाओं के अनुसार ही होती है। लेकिन वो रासायनिक नामों से ही बेची जाती है ताकि जनता को कोई उलझन न रहे। क्रोसिन और कालपोल, ब्रांडेड दवाओं के वर्ग में आती हैं जबकि जेनेरिक दवाओं में इनका नाम पैरासिटामोल है। जेनेरिक दवाओं और दूसरी दवाओं में क्या अन्तर है ? आईये, इसे समझने का प्रयास करते हैं। जब कोई कम्पनी कई सालों की रिसर्च के बाद किसी दवा की खोज करती है तो उस

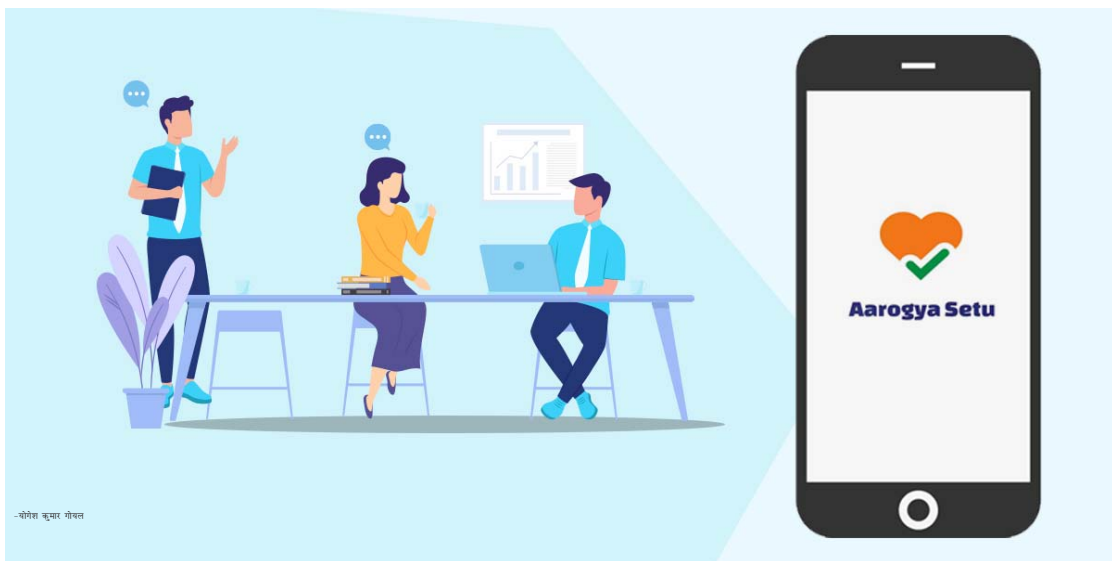
कम्पनी को उस दवा के लिये पेटेंट मिलता है जिसकी अवधि 10 से 15 वर्ष की रहती है। पेटेंट अवधि के दौरान केवल वही कम्पनी इस दवा का निर्माण कर बेच सकती है, जिसने इस दवा की खोज की है। जब दवा के पेटेंट की अवधि समाप्त हो जाती है तब उस दवा को जेनेरिक दवा कहा जाता है। यानि, पेटेंट की अवधि समाप्त होने के बाद कई अन्य कंपनियां उस दवा का निर्माण कर सकती हैं। परन्तु इस दवा का नाम और कीमत अलग-अलग रहती है। ऐसी स्थिति में दवा जेनेरिक दवा मानी जाती है। भारतीय बाजार में केवल 9 प्रतिशत दवाएं ही पेटेंटेड श्रेणी की हैं और 70 प्रतिशत से अधिक दवाएं जेनेरिक श्रेणी की हैं।

जेनेरिक दवाएं सबसे पहले भारतीय कंपनियां ही बनाती हैं। अमेरिका एवं यूरोपीयन बाजार को सबसे सस्ती जेनेरिक दवाएं भारतीय कंपनियां ही उपलब्ध कराती हैं। चीन के मुकाबले भारतीय जेनेरिक दवाएं ज्यादा गुणवत्ता वाली मानी जाती हैं और कीमत में भी सस्ती होती हैं। पूरे विश्व में विदेशों को कुल निर्यात हो रही दवाओं में भारत का हिस्सा 20 प्रतिशत है। जेनेरिक दवाएं ब्रांडेड दवाओं की तुलना में बहुत सस्ती होती हैं, इसीलिये केन्द्र सरकार ने जेनेरिक दवाओं को सस्ते मूल्यों पर उपलब्ध कराने हेतु भारत में जन औषधि केन्द्रों की स्थापना की है। इन केन्द्रों पर 600 से ज्यादा जेनेरिक दवाइयां सस्ते दामों पर मिलती हैं एवं 150 से ज्यादा सर्जिकल सामान भी सस्ती दरों पर उपलब्ध है।

दुनिया भर में भारतीय जेनेरिक दवाओं पर विश्वास बढ़ा है और ये देश अब भारत से ज्यादा से ज्यादा आयात करने लगे हैं। अमेरिकी बाजार के जेनेरिक दवाओं में भारत की हिस्सेदारी सबसे अधिक है। यूएसएफडीए के अनुसार, वित्तीय वर्ष 2017-18 में दुनिया भर के 323 दवाइयों की टेस्टिंग की गई थी। इस टेस्टिंग में भारत की सभी दवाएं पास हुई थीं। इसके साथ ही, भारत में उत्पादन ईकाइयों के मानकों को सही ठहराते हुए अमेरिकी एफडीए ने भारत की ज्यादातर उत्पादक ईकाइयों को अमेरिका में निर्यात की अनुमति दे दी है। इससे जेनेरिक दवाइयों के बाजार में भारतीय कंपनियों का दबदबा लगातार बढ़ रहा है।

आरोग्य सेतु ने दुनिया को दिखाई राह, कई नामी कंपनियां काटैक्ट ट्रेसिंग एप बनाने में जुटीं

भारत सरकार द्वारा लांच किए गए इस एप को कोरोना से जंग लड़ने के मामले में एक मजबूत हथियार माना जा रहा है। सरकार द्वारा जारी नोटिफिकेशन में कहा भी जा चुका है कि यह एप उपयोगकर्ता की निजता को ध्यान में रखकर बनाया गया है।



कोरोना के कारण विश्वभर में करीब सवा लाख लोगों की मौत हो चुकी है और अब भारत में भी इसके संक्रमण का दायरा लगातार बढ़ रहा है। देश में इसी संक्रमण को फैलने से रोकने के लिए घरों में में क्वारंटाइन किए गए लोगों पर नजर रखने के लिए सरकार अब तकनीकों का सहारा ले रही है ताकि ऐसे लोगों के मूवमेंट पर आसानी से नजर रखी जा सके। अब सरकार द्वारा कोरोना से जंग में अपेक्षित मदद पाने के लिए 'आरोग्य सेतु' नामक एक ऐप लांच किया गया है, जिसके जरिये इस ऐप का इस्तेमाल करने वाले व्यक्ति अपने आसपास कोरोना के मरीजों के बारे में जानकारी हासिल कर सकते हैं कि अपने आसपास कोई कोरोना संक्रमित तो नहीं है। यह एप लक्षणों के आधार पर यह भी बताता है कि आपको कोरोना वायरस का परीक्षण कराने की जरूरत है या नहीं। यही कारण है कि प्रधानमंत्री ने 14 अप्रैल को राष्ट्र के नाम दिए संदेश में प्रत्येक व्यक्ति से इस महत्वपूर्ण एप को डाउनलोड करने की अपील भी की है।

आरोग्य सेतु एप और डाटा सुरक्षा का सवाल

भारत सरकार द्वारा लांच किए गए इस एप को कोरोना से जंग लड़ने के मामले में एक मजबूत हथियार माना जा रहा है। सरकार द्वारा जारी नोटिफिकेशन में कहा भी जा चुका है कि यह एप उपयोगकर्ता की निजता को ध्यान में रखकर बनाया गया है लेकिन फिर भी कुछ साइबर विशेषज्ञों द्वारा उपयोगकर्ताओं के डाटा की सुरक्षा को लेकर सवाल खड़े किए जा रहे हैं। साइबर विशेषज्ञों का कहना है कि कोरोना महामारी से निपटने के लिए सरकार का यह कदम भले ही उचित लग रहा है लेकिन सरकार इस प्रकार जो जानकारीयां एकत्रित कर रही है, उनका कब और कैसे इस्तेमाल होगा, उसे लेकर स्थिति स्पष्ट नहीं है। भारत के जाने-माने साइबर विशेषज्ञ पवन दुग्गल का कहना है कि सरकार कह सकती है कि एप के जरिये कांटैक्ट ट्रेसिंग जनस्वास्थ्य के मद्देनजर इसलिए जरूरी है क्योंकि कोरोना के कम्प्युनिटी ट्रांसमिशन का

खतरा बढ़ रहा है लेकिन सरकार द्वारा ऐसी कोई गारंटी नहीं दी जा रही कि स्थिति सामान्य होने के बाद इस डाटा को नष्ट कर दिया जाएगा।

वैसे 'आरोग्य सेतु' एप की प्राइवैसी पॉलिसी में कहा गया है कि डाटा केवल भारत सरकार के साथ ही साझा होगा और उपयोगकर्ता के नाम या नंबर को सार्वजनिक नहीं किया जाएगा। सरकार का दावा है कि लोगों की लोकेशन और उनके मूवमेंट की जानकारी रखने वाला यह एप 'प्राइवैसी-फर्स्ट' के सिद्धांत पर बनाया गया है और उपयोगकर्ता का जो भी डाटा यह एप लेता है, वह इन्क्रिप्टिड है। सरकार का यह भी कहना है कि उपयोगकर्ता के डाटा का गलत इस्तेमाल नहीं होगा लेकिन कुछ साइबर विशेषज्ञ आशंका जता रहे हैं कि एप को अनइंस्टॉल करने के बाद भी सरकार सारी जानकारीयां अपने पास रख सकती है। हालांकि सरकार द्वारा स्पष्ट कर दिया गया है कि ये सभी जानकारीयां क्लाउड में अपलोड की जाएंगी और अगर कोई उपयोगकर्ता इस एप को डिलीट करता है तो 30 दिनों के भीतर उसका डाटा क्लाउड से हटा दिया जाएगा। एप में मौजूद डाटा का इस्तेमाल सरकार द्वारा कोरोना से संबंधित डाटाबेस तैयार करने और वायरस संक्रमण को फैलने से रोकने के लिए किया जाएगा। उम्मीद की जा रही है कि आरोग्य सेतु एप की मदद से सरकार आइसोलेशन तथा कोरोना वायरस के संक्रमण को फैलने से रोकने के लिए समय रहते जरूरी कदम उठाने में सफल होगी।

प्रशस्त हुआ कांटैक्ट ट्रेसिंग का मार्ग

साइबर विशेषज्ञ आरोग्य सेतु एप को लेकर भले ही जो भी सवाल उठा रहे हों लेकिन विशेषज्ञों तथा कई प्रमुख एजेंसियों द्वारा वायरस के प्रसार को रोकने के लिए इस एप को उपयोगी बताया जा चुका है। नीति आयोग के सीईओ अमिताभ कांत कह चुके हैं कि इस एप के जरिये भारत कोविड-19 के कांटैक्ट ट्रेसिंग का मार्ग प्रशस्त कर रहा है और इस एप को उपयोगकर्ता की जानकारी गोपनीय रखे जाने

के लिहाज से डिजाइन किया गया है। विश्व बैंक भी इसकी तारीफ करते हुए कह चुका है कि इस एप ने एक नया रास्ता दिखाया है और अब कोरोना से जंग में गूगल तथा एप्पल जैसी दुनिया की प्रख्यात टैक कम्पनियां भी ऐसा ही एप बना रही हैं। दोनों कम्पनियों द्वारा गत दिनों कहा गया है कि वे भी अब स्मार्टफोन में एक ऐसे सॉफ्टवेयर का निर्माण कर रहे हैं जो कांटैक्ट ट्रेसिंग में मदद करें और उपयोगकर्ताओं को सूचित करें कि वे कोविड-19 संक्रमित व्यक्तियों के संपर्क में आए हैं या नहीं। माना जा रहा है कि आरोग्य सेतु एप लांच करके भारत ने कई जानी-मानी तकनीकी कम्पनियों को भी पीछे छोड़ दिया है। इस एप का उदाहण देते हुए विश्व बैंक की दक्षिण आर्थिक केन्द्रित रिपोर्ट में कहा गया है कि कोरोना के प्रसार की निगरानी के लिए डिजिटल तकनीकों का भी उपयोग किया जा सकता है और बड़े पैमाने पर आबादी को शिक्षित करने तथा संक्रमण को ट्रैक करने में ये तकनीकें मदद कर सकती हैं।

विदेशों में भी सक्रिय हैं ऐसे एप

कोरोना के मरीजों पर नजर रखने के लिए कोरोना संक्रमण से ग्रस्त कई देशों में पहले से ही इस तरह के एप सक्रिय हैं। चीन द्वारा सरकारी विभागों तथा चीन इलैक्ट्रॉनिक्स टैक्नोलॉजी ग्रुप कॉर्पोरेशन द्वारा संयुक्त रूप से विकसित और स्वास्थ्य तथा यातायात प्राधिकरण के डाटा से समर्थित ऐसा ही एप 'क्लोज कांटैक्ट डिटेक्टर' लांच किया गया था। उस एप में कोरोना से कम प्रभावित और ज्यादा प्रभावित इलाकों को हरे और लाल जोन में मार्क किया गया था।

उस एप से उपयोगकर्ता को पता चल जाता है कि वह किसी संक्रमित व्यक्ति या कोरोना संक्रमण की आशंका वाले व्यक्ति के निकट तो नहीं है। उस एप के लिए कैमरा, फेशियल रिकॉग्निशन सॉफ्टवेयर तथा एआई तकनीक की मदद से डाटा जुटाया गया। वह एप लोगों को स्वयं यह जांचने का अवसर देता है कि वे कहीं कोरोना वायरस से संक्रमित किसी व्यक्ति

साइबर विशेषज्ञ आरोग्य सेतु एप को लेकर भले ही जो भी सवाल उठा रहे हों लेकिन विशेषज्ञों तथा कई प्रमुख एजेंसियों द्वारा वायरस के प्रसार को रोकने के लिए इस एप को उपयोगी बताया जा चुका है। नीति आयोग के सीईओ अमिताभ कांत कह चुके हैं कि इस एप के जरिये भारत कोविड-19 के कांटैक्ट ट्रेसिंग का मार्ग प्रशस्त कर रहा है और इस एप को उपयोगकर्ता की जानकारी गोपनीय रखे जाने के लिहाज से डिजाइन किया गया है। विश्व बैंक भी इसकी तारीफ करते हुए कह चुका है कि इस एप ने

एक नया रास्ता दिखाया है और अब कोरोना से जंग में गूगल तथा एप्पल जैसी दुनिया की प्रख्यात टैक कम्पनियां भी ऐसा ही एप बना रही हैं। दोनों कम्पनियों द्वारा गत दिनों कहा गया है कि वे भी अब स्मार्टफोन में एक ऐसे सॉफ्टवेयर का निर्माण कर रहे हैं जो कांटैक्ट ट्रेसिंग में मदद

करें और उपयोगकर्ताओं को सूचित करें कि वे कोविड-19 संक्रमित व्यक्तियों के संपर्क में आए हैं या नहीं। माना जा रहा है कि आरोग्य सेतु एप लांच करके भारत ने कई जानी-मानी तकनीकी कम्पनियों को भी पीछे छोड़ दिया है।

के सम्पर्क में तो नहीं आए।

चीन में वीचैट के जरिये अलर्ट

जांच के लिए उपयोगकर्ता को सोशल मीडिया प्लेटफॉर्म 'वीचैट' जैसे एप का उपयोग कर अपने स्मार्टफोन पर एक क्लिक रिस्पांस (क्यूआर) कोड को स्कैन करना होता है। उपयोगकर्ता को एप कोरोना संक्रमित व्यक्ति अथवा संक्रमण के संदिग्ध व्यक्ति के सम्पर्क में आने पर अलर्ट जारी करता है, जिसके बाद स्थानीय प्रशासन को सूचित करने की सलाह दी जाती है। 'हेल्थ कोड' नामक एक और चीनी एप भी शुरू की गई थी, जिसके आधार पर उपयोगकर्ता को उसके शरीर के तापमान तथा ट्रैवल हिस्ट्री के आधार पर एक कलर कोड दिया जाता है। उसी से यह तय होता है कि उसे क्वारंटाइन करना है या नहीं।

दक्षिण कोरिया में 'कोरोना मैप' तथा 'कोरोना 100एम'

दक्षिण कोरिया में 'कोरोना मैप' नामक एप बनाई गई थी, जो प्रशासन को यह सूचना देती है कि कोरोना से प्रभावित व्यक्ति किन-किन लोगों से मिला और किस रूट से कहां-कहां गया। इस जानकारी को 'कांटैक्ट ट्रेसिंग' नाम दिया गया था। इस एप के इस्तेमाल से वहां के व्यक्ति उन स्थानों का पता कर सकते हैं, जहां कोरोना से संक्रमित कोई व्यक्ति भर्ती हुआ हो। इसमें मरीज की लोकेशन से लेकर उसके अस्पताल की जानकारी और वो कब से पीड़ित है, ये सभी जानकारीयां भी मिल जाती हैं। दक्षिण कोरिया में 'कोरोना 100एम' नामक जीपीएस आधारित एक और एप का भी इस्तेमाल किया जा रहा है। इस एप की विशेषता यह है कि यह लोगों को 100 मीटर की दूरी से ही कोरोना वायरस के बारे में अलर्ट करने में सक्षम है। यह एप उपयोगकर्ता को उसकी लोकेशन के 100 मीटर के दायरे में संक्रमित व्यक्ति की जानकारी देता है। इसराइल में तो कोरोना संक्रमण को रोकने तथा कांटैक्ट ट्रेसिंग के लिए लोगों के मोबाइल डाटा पर नजर रखने के लिए एक अस्थाई कानून भी पास किया जा चुका है। अमेरिका, हांगकांग इत्यादि में भी सरकारों द्वारा ऐसे ही कदम उठाए जा रहे हैं।

ब्रिटेन में सी-10 कोविड सिम्पटम्स ट्रैकर

ब्रिटेन में लंदन के किंग्स कॉलेज अस्पताल के शोधकर्ताओं द्वारा बनाया गया एप 'सी-19 कोविड सिम्पटम्स ट्रैकर' यह अलर्ट देता है कि कहां कोरोना संक्रमण का खतरा है। इसके अलावा इस एप के जरिये मरीज स्वयं अपने लक्षण भी बता सकता है।

सिंगापुर में ट्रेस टूगेदर

सिंगापुर में 'ट्रेस टूगेदर' नामक एप के जरिये कोरोना संक्रमितों को ट्रैक करने का प्रयास किया जा रहा है। एप के जरिये सरकार के पास उपयोगकर्ता का पूरा डाटा रहता है, जिससे आसानी से पता चल जाता है कि वह कब एप का इस्तेमाल करने वाले दूसरे उपयोगकर्ता के सम्पर्क में आया और कितनी देर तक उसके सम्पर्क में रहा। इस एप पर कोई भी व्यक्ति उन स्थानों का पता कर सकता है, जहां संक्रमण का खतरा ज्यादा है। वहां इस एप की मदद से ऐसे लोगों को ट्रैक करने में सफलता भी मिली, जो बाद में कोरोना संक्रमित पाए गए।

यह एप उपयोगकर्ता की लोकेशन को ट्रैक करते हुए ब्लूटूथ से एप के दूसरे उपयोगकर्ताओं के सम्पर्क में आने का रिकॉर्ड रखता है। इस तरह की एप्स के जरिये इन तमाम देशों में कांटैक्ट ट्रेसिंग में काफी मदद मिली थी। इसीलिए उम्मीद की जा रही है कि 'आरोग्य सेतु' एप भारत में भी इस दिशा में काफी हद तक कारगर साबित होगा।

(कहानी)

बेटोंवाली विधवा

पंडित अयोध्यानाथ का देहांत हुआ तो सबने कहा, ईश्वर आदमी की ऐसी ही मौत दे। चार जवान बेटे थे, एक लड़की। चारों लड़कों के विवाह हो चुके थे, केवल लड़की व?वाँरी थी। संपत्ति भी काफी छोड़ी थी। एक पक्का मकान, दो बगीचे, कई हजार के गहने और बीस हजार नकद। विधवा फूलमती को शोक तो हुआ और कई दिन तक बेहाल पड़ी रही, लेकिन जवान बेटों को सामने देखकर उसे ढाढ़स हुआ। चारों लड़के एक-से-एक सुशील, चारों बहुएँ एक-से-एक बढ़कर आज्ञाकारिणी। जब वह रात को लेटती, तो चारों बारी-बारी से उसके पाँव दबार्ती; वह स्नान करके उठती, तो उसकी साड़ी छौंटती। सारा घर उसके इशारे पर चलता था। बड़ा लड़का कामता एक दफ्तर में 50 रू. पर नौकर था, छोटा उमानाथ डाकटरी पास कर चुका था और वहीं औषधालय खोलने की फिर्क में था, तीसरा दयानाथ बी. ए. में फेल हो गया था और पत्रिकाओं में लेख लिखकर कुछ-न-कुछ कमा लेता था, चौथा सीतानाथ चारों में सबसे कुशाग्र बुद्धि और होनहार था और अबकी साल बी. ए. प्रथम श्रेणी में पास करके एम. ए. की तैयारी में लगा हुआ था। किसी लड़के में वह दुर्व्यसन, वह छैलापन, वह लुटारूपन न था, जो माता-पिता को जलाता और कुल-मर्यादा को डुबाता है। फूलमती घर की मालकिन थी। गोकि कुंजियाँ बड़ी बहू के पास रहती थीं – बुढ़िया में वह अधिकार-प्रेम न था, जो वृद्धजनों को कटु और कलहशील बना दिया करता है; किन्तु उसकी इच्छा के बिना कोई बालक मिठाई तक न मँगा सकता था।

संध्या हो गयी थी। पंडित को मरे आज बारहवाँ दिन था। कल तेरही है। ब्रह्मभोज होगा। बिरादरी के लोग निमंत्रित होंगे। उसी की तैयारियाँ हो रही थीं। फूलमती अपनी कोठरी में बैठी देख रही थी, पल्लेदार बोरे में आटा लाकर रख रहे हैं। घी के टिन आ रहे हैं। शाक-भाजी के टोकरे, शक्कर की बोरियाँ, दही के मटके चले आ रहे हैं। महापात्र के लिए दान की चीजें लायी गयीं- बर्तन, कपड़े, पलंग, बिछावन, छाते, जूते, छड़ियाँ, लालटेन आदि; किन्तु फूलमती को कोई चीज नहीं दिखायी गयी। नियमानुसार ये सब सामान उसके पास आने चाहिए थे। वह प्रत्येक वस्तु को देखती उसे पसंद करती, उसकी मात्रा में कमी-बेशी का फैसला करती; तब इन चीजों को भंडारे में रखा जाता। क्यों उसे दिखाने और उसकी राय लेने की जरूरत नहीं समझी गयी? अच्छा वह आटा तीन ही बोरा क्यों आया? उसने तो पाँच बोरों के लिए कहा था। घी भी पाँच ही कनस्तर है। उसने तो दस कनस्तर मँगवाए थे। इसी तरह शाक-भाजी, शक्कर, दही आदि में भी कमी की गयी होगी। किसने उसके हुक्म में हस्तक्षेप किया? जब उसने एक बात तय कर दी, तब किसे उसको घटाने-बढ़ाने का अधिकार है?

आज चालीस वर्षों से घर के प्रत्येक मामले में फूलमती की बात सर्वमान्य थी। उसने सौ कहा तो सौ खर्च किये गये, एक कहा तो एक। किसी ने मीन-मेख न की। यहाँ तक कि पं. अयोध्यानाथ भी उसकी इच्छा के विरुद्ध कुछ न करते थे; पर आज उसकी आँखों के सामने प्रत्यक्ष रूप से उसके हुक्म की उपेक्षा की जा रही है! इसे वह क्योंकर स्वीकार कर सकती?

कुछ देर तक तो वह जब्त किये बैठी रही; पर अंत में न रहा गया। स्वायत्त शासन उसका

स्वभाव हो गया था। वह क्रोध में भरी हुई आयी और कामतानाथ से बोली- क्या आटा तीन ही बोरे लाये? मैंने तो पाँच बोरों के लिए कहा था। और घी भी पाँच ही टिन मँगवाया! तुम्हें याद है, मैंने दस कनस्तर कहा था? किफायत को मैं बुरा नहीं समझती; लेकिन जिसने यह कुआँ खोदा, उसी की आत्मा पानी को तरसे, यह कितनी लज्जा की बात है!

कामतानाथ ने क्षमा-याचना न की, अपनी भूल भी स्वीकार न की, लज्जित भी नहीं हुआ। एक मिनट तो विद्रोही भाव से खड़ा रहा, फिर बोला- हम लोगों की सलाह तीन ही बोरों की हुई और तीन बोरे के लिए पाँच टिन घी काफी था। इसी हिसाब से और चीजें भी कम कर दी गयी हैं।

फूलमती उग्र होकर बोली- किसकी राय से आटा कम किया गया?

‘हम लोगों की राय से।’

‘तो मेरी राय कोई चीज नहीं है?’

‘है क्यों नहीं; लेकिन अपना हानि-लाभ तो हम समझते हैं?’

फूलमती हक्की-बक्की होकर उसका मुँह ताकने लगी। इस वाक्य का आशय उसकी समझ में न आया। अपना हानि-लाभ! अपने घर में हानि-लाभ की जिम्मेदार वह आप है। दूसरों को, चाहे वे उसके पेट के जन्मे पुत्र ही क्यों न हों, उसके कामों में हस्तक्षेप करने का क्या अधिकार? यह लौंडा तो इस ढिठाई से जवाब

दे रहा है, मानो घर उसी का है, उसी ने मर-मरकर गृहस्थी जोड़ी है, मैं तो गैर हूँ! जरा इसकी हेकड़ी तो देखो।

उसने तमतमाये हुए मुख से कहा- मेरे हानि-लाभ के जिम्मेदार तुम नहीं हो। मुझे अख्तियार है, जो उचित समझूँ, वह करूँ। अभी जाकर दो बोरे आटा और पाँच टिन घी और लाओ और आगे के लिए खबरदार, जो किसी ने मेरी बात काटी।

अपने विचार में उसने काफी तम्बीह कर दी थी। शायद इतनी कठोरता अनावश्यक थी। उसे अपनी उग्रता पर खेद हुआ। लड़के ही तो हैं, समझे होंगे कुछ किफायत करनी चाहिए। मुझसे इसलिए न पूछा होगा कि अम्माँ तो खुद हरेक काम में किफायत करती हैं। अगर इन्हें मालूम होता कि इस काम में मैं किफायत पसंद न करूँगी, तो कभी इन्हें मेरी उपेक्षा करने का साहस न होता। यद्यपि कामतानाथ अब भी उसी जगह खड़ा था और उसकी भावभंगी से ऐसा ज्ञात होता था कि इस आज्ञा का पालन करने के लिए वह बहुत उत्सुक नहीं, पर फूलमती निश्चित होकर अपनी कोठरी में चली गयी। इतनी तम्बीह पर भी किसी को उसकी अवज्ञा करने की सामर्थ्य हो सकती है, इसकी संभावना का ध्यान भी उसे न आया।

पर ज्यों-ज्यों समय बीतने लगा, उस पर यह हकीकत खुलने लगी कि इस घर में अब उसकी वह हैसियत नहीं रही, जो दस-बारह दिन पहले थी। संबंधियों के यहाँ के नेवते में शक्कर, मिठाई, दही, अचार आदि आ रहे

थे। बड़ी बहू इन वस्तुओं को स्वामिनी-भाव से सँभाल-सँभालकर रख रही थी। कोई भी उससे पूछने नहीं आता। बिरादरी के लोग जो कुछ पूछते हैं, कामतानाथ से या बड़ी बहू से। कामतानाथ कहाँ का बड़ा इंतजामकार है, रात-दिन भंग पिये पड़ा रहता है किसी तरह रो-धोकर दफ्तर चला जाता है। उसमें भी महीने में पंद्रह नागों से कम नहीं होते। वह तो कहो, साहब पंडितजी का लिहाज करता है, नहीं अब तक कभी का निकाल देता। और बड़ी बहू जैसी फूहड़ औरत भला इन सब बातों को क्या समझेगी! अपने कपड़े-लते तक तो जतन से रख नहीं सकती, चली है गृहस्थी चलाने! भद होगी और क्या। सब मिलकर कुल की नाक कटवायेंगे। वक्त पर कोई-न-कोई चीज कम हो जायेगी। इन कामों के लिए बड़ा अनुभव चाहिए। कोई मारी-मारी फिरेगी। कोई चीज इतनी कम बनेगी कि किसी पत्तल पर पहुँचेगी, किसी पर नहीं। आखिर इन सबों को हो क्या गया है! अच्छा, बहू तिजोरी क्यों खोल रही है? वह मेरी आज्ञा के बिना तिजोरी खोलनेवाली कौन होती है? कुंजी उसके पास है अवश्य; लेकिन जब तक मैं रूपये न निकलवाऊँ, तिजोरी नहीं खुलती। आज तो इस तरह खोल रही है, मानो मैं कुछ हूँ ही नहीं। यह मुझसे न बर्दाश्त होगा!

वह झमककर उठी और बहू के पास जाकर कठोर स्वर में बोली- तिजोरी क्यों खोलती हो बहू, मैंने तो खोलने को नहीं कहा?

बड़ी बहू ने निस्संकोच भाव से उत्तर दिया- बाजार से सामान आया है, तो दाम न दिया जायेगा।

‘कौन चीज किस भाव में आयी है और कितनी आयी है, यह मुझे कुछ नहीं मालूम! जब तक हिसाब-किताब न हो जाये, रूपये कैसे दिये जायें?’

‘हसाब-किताब सब हो गया है।’

‘किसने किया?’

‘अब मैं क्या जानूँ किसने किया? जाकर मरदों से पूछो! मुझे हुक्म मिला, रूपये लाकर दे दो, रूपये लिये जाती हूँ!’

फूलमती खून का घूँट पीकर रह गयी। इस वक्त बिगड़ने का अवसर न था। घर में मेहमान स्त्री-पुरुष भरे हुए थे। अगर इस वक्त उसने लड़कों को डाँटा, तो लोग यही कहेंगे कि इनके घर में पंडितजी के मरते ही फूट पड़ गयी। दिल पर पत्थर रखकर फिर अपनी कोठरी में चली गयी। जब मेहमान विदा हो जायेंगे, तब वह एक-एक की खबर लेगी। तब देखेगी, कौन उसके सामने आता है और क्या कहता है। इनकी सारी चौकड़ी भुला देगी।

किन्तु कोठरी के एकांत में भी वह निश्चित न बैठी थी। सारी परिस्थिति को गिद्ध दृष्टि से देख रही थी, कहाँ सत्कार का कौन-सा नियम भंग होता है, कहाँ मर्यादाओं की उपेक्षा की जाती है। भोज आरम्भ हो गया। सारी बिरादरी एक साथ पंगत में बैठा दी गयी। आँगन में मुश्किल से दो सौ आदमी बैठ सकते हैं। ये पाँच सौ आदमी इतनी-सी जगह में कैसे बैठ जायेंगे? क्या आदमी के ऊपर आदमी बिठाए जायेंगे? दो पंगतों में लोग बिठाये जाते तो क्या बुराई हो जाती? यही तो होता कि बारह बजे की जगह भोज दो बजे समाप्त होता; मगर यहाँ तो सबको सोने की जल्दी पड़ी हुई है। किसी तरह यह बला सिर से टले और चैन से सोयें। लोग कितने सटकर बैठे हुए हैं कि किसी को हिलने की भी जगह नहीं।

पत्तल एक-पर-एक रखे हुए हैं। पूरियाँ ठंडी हो गई। लोग गरम-गरम माँग रहे हैं। मैदे की पूरियाँ ठंडी होकर चिमड़ी हो जाती हैं। इन्हें कौन खायेगा? रसोइये को कढ़ाव पर से न जाने क्यों उठा दिया गया? यही सब बातें नाक काटने की हैं।

सहसा शोर मचा, तरकारियों में नमक नहीं। बड़ी बहू जल्दी-जल्दी नमक पीसने लगी। फूलमती क्रोध के मारे ओठ चबा रही थी, पर इस अवसर पर मुँह न खोल सकती थी। नमक पिसा और पत्तलों पर डाला गया। इतने में फिर शोर मचा- पानी गरम है, ठंडा पानी लाओ! ठंडे पानी का कोई प्रबन्ध न था, बर्फ भी न मँगाई गयी। आदमी बाजार दौड़ाया गया, मगर बाजार में इतनी रात गये बर्फ कहाँ? आदमी खाली हाथ लौट आया। मेहमानों को वही नल का गरम पानी पीना पड़ा। फूलमती का बस चलता, तो लड़कों का मुँह नोच लेती। ऐसी छीछलेदर उसके घर में कभी न हुई थी। उस पर सब मालिक बनने के लिए मरते हैं। बर्फ जैसी जरूरी चीज मँगवाने की भी किसी को सुधि न थी! सुधि कहाँ से रहे- जब किसी को गप लड़ाने से फुर्सत मिले। मेहमान अपने दिल में क्या कहेंगे कि चले हैं बिरादरी को भोज देने और घर में बर्फ तक नहीं!

अच्छा, फिर यह हलचल क्यों मच गयी? अरे, लोग पंगत से उठे जा रहे हैं। क्या मामला है?

फूलमती उदासीन न रह सकी। कोठरी से निकलकर बरामदे में आयी और कामतानाथ से पूछा- ‘क्या बात हो गयी लल्ला? लोग उठे क्यों जा रहे हैं?’ कामता ने कोई जवाब न दिया। वहाँ से खिसक गया। फूलमती झुंझलाकर रह गयी। सहसा कहारिन मिल गयी। फूलमती ने उससे भी यह प्रश्न किया। मालूम हुआ, किसी के शोरबे में मरी हुई चुहिया निकल आयी। फूलमती चित्रलिखित-सी वहीं खड़ी रह गयी। भीतर ऐसा उबाल उठा कि दीवार से सिर टकरा ले! अभाग्य भोज का प्रबन्ध करने चले थे। इस फूहड़पन की कोई हद है, कितने आदमियों का धर्म सत्यानाश हो गया! फिर पंगत क्यों न उठ जाये? आँखों से देखकर अपना धर्म कौन गँवायेगा? हा! सारा किया-धरा मिट्टी में मिल गया। सैकड़ों रूपये पर पानी फिर गया! बदनामी हुई वह अलग।

मेहमान उठ चुके थे। पत्तलों पर खाना ज्यों-का-त्यों पड़ा हुआ था। चारों लड़के आँगन में लज्जित खड़े थे। एक दूसरे को इलजाम दे रहा था। बड़ी बहू अपनी देवरानियों पर बिगड़ रही थी। देवरानियाँ सारा दोष कुमुद के सिर डालती थी। कुमुद खड़ी रो रही थी। उसी वक्त फूलमती झल्लायी हुई आकर बोली- ‘मुँह में कालिख लगी कि नहीं या अभी कुछ कसर बाकी है? डूब मरो, सब-के-सब जाकर चिल्लू-भर पानी में! शहर में कहीं मुँह दिखाने लायक भी नहीं रहे।’ किसी लड़के ने जवाब न दिया।

फूलमती और भी प्रचंड होकर बोली- ‘तुम लोगों को क्या? किसी को शर्म-हया तो है नहीं। आत्मा तो उनकी रो रही है, जिन्होंने अपनी जिन्दगी घर की मरजाद बनाने में खराब कर दी। उनकी पवित्र आत्मा को तुमने यों कलंकित किया? शहर में थुड़ी-थुड़ी हो रही है। अब कोई तुम्हारे द्वार पर पेशाब करने तो आयेगा नहीं!’

कामतानाथ कुछ देर तक तो चुपचाप खड़ा सुनता रहा। आखिर झुंझला कर बोला- ‘अच्छा, अब चुप रहो अम्माँ। भूल हुई, हम सब मानते हैं, बड़ी भयंकर भूल हुई, लेकिन अब क्या उसके लिए घर के प्राणियों को हलाल-कर डालोगी? सभी से भूलें होती हैं। आदमी पछताकर रह जाता है। किसी की जान तो नहीं मारी जाती?’

शेष पृष्ठ..९ पर



बड़ी बहू ने अपनी सफाई दी- ‘हम क्या जानते थे कि बीबी (कुमुद) से इतना-सा काम भी न होगा। इन्हें चाहिए था कि देखकर तरकारी कढ़ाव में डालतीं। टोकरी उठाकर कढ़ाव मे डाल दी! हमारा क्या दोष!’

कामतानाथ ने पत्नी को डाँटा- ‘इसमें न कुमुद का कसूर है, न तुम्हारा, न मेरा। संयोग की बात है। बदनामी भाग में लिखी थी, वह हुई। इतने बड़े भोज में एक-एक मुट्ठी तरकारी कढ़ाव में नहीं डाली जाती! टोकरे-के-टोकरे उड़ेल दिए जाते हैं। कभी-कभी ऐसी दुर्घटना होती है। पर इसमें कैसी जग-हँसाई और कैसी नक-कटाई। तुम खामखाह जले पर नमक छिड़कती हो!’

फूलमती ने दौँत पीसकर कहा- ‘शरमाते तो नहीं, उलटे और बेहयाई की बातें करते हो।’

कामतानाथ ने निस्कोच होकर कहा- ‘शरमाऊँ क्यों, किसी की चोरी की हैं? चीनी में चींटे और आटे में चुन, यह नहीं देखे जाते। पहले हमारी निगाह न पड़ी, बस, यहीं बात बिगाड़ गयी। नहीं, चुपके से चुहिया निकालकर फेंक देते। किसी को खबर भी न होती।’

फूलमती ने चकित होकर कहा- ‘क्या कहता है, मरी चुहिया खिलाकर सबका धर्म बिगाड़ देता?’

कामता हँसकर बोला- ‘क्या पुराने जमाने की बातें करती हो अम्माँ। इन बातों से धर्म नहीं जाता? यह धर्मात्मा लोग जो पत्तल पर से उठ गये हैं,इनमें से कौन है, जो भेड़-बकरी का मांस न खाता हो? तालाब के कछुए और घोंघे तक तो किसी से बचते नहीं। जरा-सी चुहिया में क्या रखा था!’

फूलमती को ऐसा प्रतीत हुआ कि अब प्रलय आने में बहुत देर नहीं है। जब पढ़े-लिखे आदमियों के मन मे ऐसे अधार्मिक भाव आने लगे, तो फिर धर्म की भगवान ही रक्षा करें। अपना-सा मुँह लेकर चली गयी।

दो महीने गुजर गये हैं। रात का समय है। चारों भाई दिन के काम से छुट्टी पाकर कमरे में बैठे गप-शप कर रहे हैं। बड़ी बहू भी षड्यंत्र में शरीक है। कुमुद के विवाह का प्रश्न छिड़ा हुआ है।

कामतानाथ ने मसनद पर टेक लगाते हुए कहा- ‘दादा की बात दादा के साथ गयी। पंडित विद्वान भी हैं और कुलीन भी होंगे। लेकिन जो आदमी अपनी विद्याव और कुलीनता को रूपयों पर बेचे, वह नीच है। ऐसे नीच आदमी के लड़के से हम कुमुद का विवाह संत में भी न करेंगे, पाँच हजार तो दूर की बात है। उसे बताओ धता और किसी दूसरे वर की तलाश करो। हमारे पास कुल बीस हजार ही तो हैं। एक-एक के हिस्से में पाँच-पाँच हजार आते हैं। पाँच हजार दहेज में दे दें, और पाँच हजार नेग-न्योछावर, बाजे-गाजे में उड़ा दें, तो फिर हमारी बधिया ही बैठ जायेगी।’

उमानाथ बोले- ‘मुझे अपना औषधालय खोलने के लिए कम-से-कम पाँच हजार की जरूरत है। मैं अपने हिस्से में से एक पाई भी नहीं दे सकता। फिर खुलते ही आमदनी तो होगी नहीं। कम-से-कम साल-भर घर से खाना पड़ेगा।’

दयानाथ एक समाचार-पत्र देख रहे थे। आँखों से ऐनक उतारते हुए बोले- मेरा विचार भी एक पत्र निकालने का है। प्रेस और पत्र में कम-से-कम दस हजार का कैपिटल चाहिए। पाँच हजार मेरे रहेंगे तो कोई-न-कोई साझेदार भी मिल जायेगा। पत्रों में लेख लिखकर मेरा निर्वाह नहीं हो सकता।

कामतानाथ ने सिर हिलाते हुए कहा- ‘अजी, राम भजो, संत में कोई लेख छापता नहीं, रूपये कौन देता है।’

दयानाथ ने प्रतिवाद किया- ‘नहीं, यह बात तो नहीं है। मैं तो कहीं भी बिना पेशगी पुरस्कार लिये नहीं लिखता।’

कामता ने जैसे अपने शब्द वापस लिये- ‘तुम्हारी बात मैं नहीं कहता भाई। तुम तो थोड़ा-बहुत मार लेते हो, लेकिन सबको तो नहीं मिलता।’

बड़ी बहू ने श्रद्धा भाव ने कहा- ‘कन्या भाग्यवान हो तो दरिद्र घर में भी सुखी रह सकती है। अभागी हो, तो राजा के घर में भी रोयेगी। यह सब नसीबों का खेल है।’

कामतानाथ ने स्त्री की ओर प्रशंसा-भाव से देखा- ‘फिर इसी साल हमें सीता का विवाह भी तो करना है।’

सीतानाथ सबसे छोटा था। सिर झुकाये भाइयों की स्वार्थ-भरी बातें सुन-सुनकर कुछ कहने के लिए उतावला हो रहा था। अपना नाम सुनते ही बोला- ‘मेरे विवाह की आप लोग चिन्ता न करें। मैं जब तक किसी धंधे में न लग जाऊँगा, विवाह का नाम भी न लूँगा; और सच पूछिये तो मैं विवाह करना ही नहीं चाहता। देश को इस समय बालकों की जरूरत नहीं, काम करने वालों की जरूरत है। मेरे हिस्से के रूपये आप कुमुद के विवाह में खर्च कर दें। सारी बातें तय हो जाने के बाद यह उचित नहीं है कि पंडित मुरारीलाल से संबंध तोड़ लिया जाये।’

उमा ने तीव्र स्वर में कहा- ‘दस हजार कहाँ से आयेंगे?’

सीता ने डरते हुए कहा- ‘मैं तो अपने हिस्से के रूपये देने को कहता हूँ।’

‘और शेष?’

‘मुरारीलाल से कहा जाये कि दहेज में कुछ कमी कर दें। वे इतने स्वार्थांध नहीं हैं कि इस अवसर पर कुछ बल खाने को तैयार न हो जायें, अगर वह तीन हजार में संतुष्ट हो जाएं तो पाँच हजार में विवाह हो सकता है।

उमा ने कामतानाथ से कहा- सुनते हैं भाई साहब, इसकी बातें।

दयानाथ बोल उठे- तो इसमें आप लोगों का क्या नुकसान है? मुझे तो इस बात से खुशी हो रही है कि भला, हममें कोई तो त्याग करने योग्य है। इन्हें तत्काल रूपये की जरूरत नहीं है। सरकार से वजीफा पाते ही हैं। पास होने पर कहीं-न-कहीं जगह मिल जायेगी। हम लोगों की हालत तो ऐसी नहीं है।

कामतानाथ ने दूरदर्शिता का परिचय दिया- नुकसान की एक ही कही। हममें से एक को कष्ट हो तो क्या और लोग बैठे देखेंगे? यह अभी लड़के हैं,इन्हें क्या मालूम, समय पर एक रूपया एक लाख का काम करता है। कौन जानता है, कल इन्हें विलायत जाकर पढ़ने के लिए सरकारी वजीफा मिल जाये या सिविल सर्विस में आ जायें। उस वक्त सफर की तैयारियों में चार-पाँच हजार लग जाएँगे। तब किसके सामने हाथ फैलाते फिरेंगे? मैं यह नहीं चाहता कि दहेज के पीछे इनकी जिन्दगी नष्ट हो जाये।

इस तर्क ने सीतानाथ को भी तोड़ लिया। सकुचाता हुआ बोला- हाँ, यदि ऐसा हुआ तो

बेशक मुझे रूपये की जरूरत होगी।

‘क्या ऐसा होना असंभव है?’

‘असंभव तो मैं नहीं समझता; लेकिन कठिन अवश्य है। वजीफे उन्हें मिलते हैं, जिनके पास सिफारिशें होती हैं, मुझे कौन पूछता है।’

‘कभी-कभी सिफारिशें धरी रह जाती हैं और बिना सिफारिश वाले बाजी मार ले जाते हैं।’

‘तो आप जैसा उचित समझें। मुझे यहाँ तक मंजूर है कि चाहे मैं विलायत न जाऊँ; पर कुमुद अच्छे घर जाये।’

कामतानाथ ने निष्ठा-भाव से कहा- अच्छा घर दहेज देने ही से नहीं मिलता भैया! जैसा तुम्हारी भाभी ने कहा, यह नसीबों का खेल है। मैं तो चाहता हूँ कि मुरारीलाल को जवाब दे दिया जाये और कोई ऐसा घर खोजा जाये, जो थोड़े में राजी हो जाये। इस विवाह में मैं एक हजार से ज्यादा नहीं खर्च कर सकता। पंडित दीनदयाल कैसे हैं?



उमा ने प्रसन्न होकर कहा- बहुत अच्छे। एम.ए., बी.ए. न सही, यजमानों से अच्छी आमदनी है।

दयानाथ ने आपत्ति की- अम्माँ से भी पूछ तो लेना चाहिए।

कामतानाथ को इसकी कोई जरूरत न मालूम हुई। बोले- उनकी तो जैसे बुद्धि ही भ्रष्ट हो गयी। वही पुराने युग की बातें! मुरारीलाल के नाम पर उधार खाये बैठी हैं। यह नहीं समझतीं कि वह जमाना नहीं रहा। उनको तो बस, कुमुद मुरारी पंडित के घर जाये, चाहे हम लोग तबाह हो जायें।

उमा ने एक शंका उपस्थित की- अम्माँ अपने सब गहने कुमुद को दे देंगी, देख लीजिएगा।

कामतानाथ का स्वार्थ नीति से विद्रोह न कर सका। बोले- गहनों पर उनका पूरा अधिकार है। यह उनका स्त्रीधन है। जिसे चाहें, दे सकती हैं।

उमा ने कहा- स्त्रीधन है तो क्या वह उसे लुटा देंगी। आखिर वह भी तो दादा ही की कमाई है।

‘कसी की कमाई हो। स्त्रीधन पर उनका पूरा अधिकार है!’

‘यह कानूनी गोरखधंधे हैं। बीस हजार में तो चार हिस्सेदार हों और दस हजार के गहने अम्माँ के पास रह जायें। देख लेना, इन्हीं के बल पर वह कुमुद का विवाह मुरारी पंडित के घर करेंगी।’

उमानाथ इतनी बड़ी रकम को इतनी आसानी से नहीं छोड़ सकता। वह कपट-नीति में कुशल है। कोई कौशल रचकर माता से सारे गहने ले लेगा। उस वक्त तक कुमुद के विवाह की चर्चा करके फूलमती को भड़काना उचित नहीं। कामतानाथ ने सिर हिलाकर कहा- भाई, मैं इन चालों को पसंद नहीं करता।

उमानाथ ने खिसियाकर कहा- गहने दस हजार से कम के न होंगे।

कामता अविचलित स्वर में बोले- कितने ही के हों; मैं अनीति में हाथ नहीं डालना चाहता।

‘तो आप अलग बैठिए। हाँ, बीच में भांजी न मारिएगा।’

‘मैं अलग रहूँगा।’

‘और तुम सीता?’

‘अलग रहूँगा।’

लेकिन जब दयानाथ से यही प्रश्न किया गया, तो वह उमानाथ से सहयोग करने को तैयार हो गया। दस हजार में ढाई हजार तो उसके होंगे ही। इतनी बड़ी रकम के लिए यदि कुछ कौशल भी करना पड़े तो क्षम्य है।

फूलमती रात को भोजन करके लेटी थी कि उमा और दया उसके पास जा कर बैठ गये। दोनों ऐसा मुँह बनाए हुए थे, मानो कोई भारी विपत्ति आ पड़ी है। फूलमती ने सशंक होकर पूछा- तुम दोनों घबड़ाये हुए मालूम होते हो?

उमा ने सिर खुजलाते हुए कहा- समाचार-पत्रों में लेख लिखना बड़े जोखिम का काम है अम्माँ! कितना ही बचकर लिखो, लेकिन कहीं-न-कहीं पकड़ हो ही जाती है। दयानाथ ने एक लेख लिखा था। उस पर पाँच हजार की जमानत माँगी गयी है। अगर कल तक जमा न कर दी गयी, तो गिरफ्तार हो जायेंगे और दस साल की सजा टुक जायेगी।

फूलमती ने सिर पीटकर कहा- ऐसी बातें क्यों लिखते हो बेटा? जानते नहीं हो, आजकल हमारे अदिन आए हुए हैं। जमानत किसी तरह टल नहीं सकती?

दयानाथ ने अपराधी-भाव से उत्तर दिया- मैंने तो अम्माँ, ऐसी कोई बात नहीं लिखी थी; लेकिन किस्मत को क्या करूँ। हाकिम जिला इतना कड़ा है कि जरा भी रियायत नहीं करता। मैंने जितनी दौड़-धूप हो सकती थी, वह सब कर ली।

‘तो तुमने कामता से रूपये का प्रबन्ध करने को नहीं कहा?’

उमा ने मुँह बनाया- उनका स्वभाव तो तुम जानती

हो अम्माँ, उन्हें रूपये प्राणों से प्यारे हैं। इन्हें चाहे कालापानी ही हो जाये, वह एक पाई न देंगे।

दयानाथ ने समर्थन किया- मैंने तो उनसे इसका जिक्र ही नहीं किया।

फूलमती ने चारपाई से उठते हुए कहा- चलो, मैं कहती हूँ, देगा कैसे नहीं? रूपये इसी दिन के लिए होते हैं कि गाड़कर रखने के लिए?

उमानाथ ने माता को रोककर कहा- नहीं अम्माँ, उनसे कुछ न कहो। रूपये तो न देंगे, उल्टे और हाय-हाय मचायेंगे। उनको अपनी नौकरी की खैरियत मनानी है, इन्हें घर में रहने भी न देंगे। अफ़सरां में जाकर खबर दे दें तो आश्चर्य नहीं।

फूलमती ने लाचार होकर कहा- तो फिर जमानत का क्या प्रबन्ध करोगे? मेरे पास तो कुछ नहीं है। हाँ, मेरे गहने हैं, इन्हें ले जाओ, कहीं गिरां रखकर जमानत दे दो। और आज से कान पकड़ो कि किसी पत्र में एक शब्द भी न लिखोगे।

दयानाथ कानों पर हाथ रखकर बोला- यह तो नहीं हो सकता अम्माँ, कि तुम्हारे जेवर लेकर मैं अपनी जान बचाऊँ। दस-पाँच साल की कैद ही तो होगी, झेल लूँगा। यहीं बैठा-बैठा क्या कर रहा हूँ!

फूलमती छाती पीटते हुए बोली-कैसी बातें मुँह से निकालते हो बेटा, मेरे जीते-जी तुम्हें कौन गिरफ्तार कर सकता है! उसका मुँह झुलस दूँगी। गहने इसी दिन के लिए हैं या और किसी दिन के लिए! जब तुम्हीं न रहोगे, तो गहने लेकर क्या आग में झोकूँगी!

उसने पिटारी लाकर उसके सामने रख दी।

दया ने उमा की ओर जैसे फरियाद की आँखों से देखा और बोला- आपकी क्या राय है भाई साहब? इसी मारे मैं कहता था, अम्माँ को बताने की जरूरत नहीं। जेल ही तो हो जाती या और कुछ?

उमा ने जैसे सिफारिश करते हुए कहा- यह कैसे हो सकता था कि इतनी बड़ी वारदात हो जाती और अम्माँ को खबर न होती। मुझसे यह नहीं हो सकता था कि सुनकर पेट में डाल लेता; मगर अब करना क्या चाहिए, यह मैं खुद निर्णय नहीं कर सकता। न तो यही अच्छा लगता है कि तुम जेल जाओ और न यही अच्छा लगता है कि अम्माँ के गहने गिरां रखे जायें।

फूलमती ने व्यथित कंठ से पूछा- क्या तुम समझते हो, मुझे गहने तुमसे ज्यादा प्यारे हैं? मैं तो प्राण तक तुम्हारे ऊपर न्योछावर कर दूँ, गहनों की बिसात ही क्या है।

दया ने दृढ़ता से कहा- अम्माँ, तुम्हारे गहने तो न लूँगा, चाहे मुझ पर कुछ ही क्यों न आ पड़े। जब आज तक तुम्हारी कुछ सेवा न कर सका, तो किस मुँह से तुम्हारे गहने उठा ले जाऊँ? मुझ जैसे कपूत को तो तुम्हारी कोख से जन्म ही न लेना चाहिए था। सदा तुम्हें कष्ट ही देता रहा।

फूलमती ने भी उतनी ही दृढ़ता से कहा- अगर यों न लोगे, तो मैं खुद जाकर इन्हें गिरां रख दूँगी और खुद हाकिम जिला के पास जाकर जमानत जमा कर आऊँगी; अगर इच्छा हो तो यह परीक्षा भी ले लो। आँखें बंद हो जाने के बाद क्या होगा, भगवान् जानें, लेकिन जब तक जीती हूँ तुम्हारी ओर कोई तिरछी आँखों से देख नहीं सकता।

उमानाथ ने मानो माता पर एहसान रखकर कहा- अब तो तुम्हारे लिए कोई रास्ता नहीं रहा दयानाथ। क्या हरज है, ले लो; मगर याद रखो,

ज्यों ही हाथ में रूपये आ जायें, गहने छुड़ाने पड़ेंगे। सच कहते हैं, मातृत्व दीर्घ तपस्या है। माता के सिवाय इतना स्नेह और कौन कर सकता है? हम बड़े अभागे हैं कि माता के प्रति जितनी श्रद्धा रखनी चाहिए, उसका शतांश भी नहीं रखते।

एक माता अपने बच्चे को गोद में लेते हैं

दोनों ने जैसे बड़े धर्मसंकट में पड़कर गहनों की पिटारी सँभाली और चलते बने। माता वात्सल्य-भरी आँखों से उनकी ओर देख रही थी और उसकी संपूर्ण आत्मा का आशीर्वाद जैसे उन्हें अपनी गोद में समेट लेने के लिए व्याकुल हो रहा था। आज कई महीने के बाद उसके भग्न मातृ-हृदय को अपना सर्वस्व अर्पण करके जैसे आनन्द की विभूति मिली। उसकी स्वामिनी कल्पना इसी त्याग के लिए, इसी आत्मसमर्पण के लिए जैसे कोई मार्ग ढूँढ़ती रहती थी। अधिकार या लोभ या ममता की वहाँ गँध तक न थी। त्याग ही उसका आनन्द और त्याग ही उसका अधिकार है। आज अपना खोया हुआ अधिकार पाकर अपनी सिरजी हुई प्रतिमा पर अपने प्राणों की भेंट करके वह निहाल हो गयी।

एक माता अपने बच्चे को गोद में लेते हैं

तीन महीने और गुजर गये। माँ के गहनों पर हाथ साफ करके चारों भाई उसकी दिलजोई करने लगे थे। अपनी स्त्रियों को भी समझाते थे कि उसका दिल न दुखायें। अगर थोड़े-से शिष्टाचार से उसकी आत्मा को शांति मिलती है, तो इसमें क्या हानि है। चारों करते अपने मन की, पर माता से सलाह ले लेते या ऐसा जाल फैलाते कि वह सरला उनकी बातों में आ जाती और हरेक काम में सहमत हो जाती। बाग को बेचना उसे बहुत बुरा लगता था;लेकिन चारों ने ऐसी माया रची कि वह उसे बेचने पर राजी हो गयी, किन्तु कुमुद के विवाह के विषय में मतैक्य न हो सका। माँ पं. मुरारीलाल पर जमी हुई थी, लड़के दीनदयाल पर अड़े हुए थे। एक दिन आपस में कलह हो गयी।

एक माता अपने बच्चे को गोद में लेते हैं

फूलमती ने कहा- माँ-बाप की कमाई में बेटी का हिस्सा भी है। तुन्हें सोलह हजार का एक बाग मिला, पच्चीस हजार का एक मकान। बीस हजार नकद में क्या पाँच हजार भी कुमुद का हिस्सा नहीं है?

एक माता अपने बच्चे को गोद में लेते हैं

कामता ने नम्रता से कहा- अम्माँ, कुमुद आपकी लड़की है, तो हमारी बहन है। आप दो-चार साल में प्रस्थान कर जायेंगी; पर हमारा और उसका बहुत दिनों तक संबंध रहेगा। तब हम यथाशक्ति कोई ऐसी बात न करेंगे, जिससे उसका अमंगल हो; लेकिन हिस्से की बात कहती हो, तो कुमुद का हिस्सा कुछ नहीं। दादा जीवित थे, तब और बात थी। वह उसके विवाह में जितना चाहते, खर्च करते। कोई उनका हाथ न पकड़ सकता था; लेकिन अब तो हमें एक-एक पैसे की किफायत करनी पड़ेगी। जो काम हजार में हो जाये, उसके लिए पाँच हजार खर्च करना कहाँ की बुद्धिमानी है?

एक माता अपने बच्चे को गोद में लेते हैं

उमानाथ से सुधारा- पाँच हजार क्यों, दस हजार कहिए।

एक माता अपने बच्चे को गोद में लेते हैं

कामता ने भवें सिकोड़कर कहा- नहीं, मैं पाँच हजार ही कहूँगा; एक विवाह में पाँच हजार खर्च करने की हमारी हैसियत नहीं है।

एक माता अपने बच्चे को गोद में लेते हैं

फूलमती ने जिद पकड़कर कहा- विवाह तो मुरारीलाल के पुत्र से ही होगा, पाँच हजार खर्च हों, चाहे दस हजार। मेरे पति की कमाई है। मैंने मर-मरकर जोड़ा है। अपनी इच्छा से खर्च करूँगी। तुम्हीं ने मेरी कोख से नहीं जन्म लिया है। कुमुद भी उसी कोख से आयी है। मेरी आँखों में तुम सब बराबर हो। मैं किसी से कुछ माँगती नहीं। तुम बैठे तमाशा देखो, मैं सब-कुछ कर लूँगी। बीस हजार में पाँच हजार कुमुद का है।

एक माता अपने बच्चे को गोद में लेते हैं

कामतानाथ को अब कड़वे सत्य की शरण लेने के सिवा और मार्ग न रहा। बोला- अम्माँ, तुम बरबस बात बढ़ाती हो। जिन रूपयों को

तुम अपना समझती हो, वह तुम्हारे नहीं हैं; तुम हमारी अनुमति के बिना उनमें से कुछ नहीं खर्च कर सकती।

एक माता अपने बच्चे को गोद में लेते हैं

फूलमती को जैसे सर्प ने डस लिया- क्या कहा! फिर तो कहना! मैं अपने ही संचे रूपये अपनी इच्छा से नहीं खर्च कर सकती?

एक माता अपने बच्चे को गोद में लेते हैं

‘वह रूपये तुम्हारे नहीं रहे, हमारे हो गये।’

एक माता अपने बच्चे को गोद में लेते हैं

‘तुम्हारे होंगे; लेकिन मेरे मरने के पीछे।’

एक माता अपने बच्चे को गोद में लेते हैं

‘नहीं, दादा के मरते ही हमारे हो गये!’

एक माता अपने बच्चे को गोद में लेते हैं

उमानाथ ने बेहयाई से कहा- अम्माँ, कानून-कायदा तो जानतीं नहीं, नाहक उछलती हैं।

एक माता अपने बच्चे को गोद में लेते हैं

फूलमती क्रोध-विह्वल रोकर बोली- भाड़ में जाये तुम्हारा कानून। मैं ऐसे कानून को नहीं जानती। तुम्हारे दादा ऐसे कोई धत्रासेठ नहीं थे। मैंने ही पेट और तन काटकर यह गृहस्थी जोड़ी है, नहीं आज बैठने की छाँह न मिलती! मेरे जीते-जी तुम मेरे रूपये नहीं छूसकते। मैंने तीन भाइयों के विवाह में दस-दस हजार खर्च किये हैं। वही मैं कुमुद के विवाह में भी खर्च करूँगी।

एक माता अपने बच्चे को गोद में लेते हैं

कामतानाथ भी गर्म पड़ा- आपको कुछ भी खर्च करने का अधिकार नहीं है।

एक माता अपने बच्चे को गोद में लेते हैं

उमानाथ ने बड़े भाई को डाँटा- आप खामखाह अम्माँ के मुँह लगते हैं भाई साहब! मुरारीलाल को पत्र लिख दीजिए कि तुम्हारे यहाँ कुमुद का विवाह न होगा। बस, छुट्टी हुई। कायदा-कानून तो जानतीं नहीं, व्यर्थ की बहस करती हैं।

एक माता अपने बच्चे को गोद में लेते हैं

फूलमती ने संयमित स्वर में कहा- अच्छा, क्या कानून है, जरा मैं भी सुनूँ।

एक माता अपने बच्चे को गोद में लेते हैं

उमा ने निरीह भाव से कहा- कानून यही है कि बाप के मरने के बाद जायदाद बेटों की हो जाती है। माँ का हक केवल रोटी-कपड़े का है।

एक माता अपने बच्चे को गोद में लेते हैं

फूलमती ने तड़पकर पूछा- किसने यह कानून बनाया है?

एक माता अपने बच्चे को गोद में लेते हैं

उमा शांत स्थिर स्वर में बोला- हमारे ऋषियों ने, महाराज मनु ने, और किसने?

एक माता अपने बच्चे को गोद में लेते हैं

फूलमती एक क्षण अवाक् रहकर आहत कंठ से बोली- तो इस घर में मैंं तुम्हारे टुकड़ों पर पड़ी हुई हूँ?

एक माता अपने बच्चे को गोद में लेते हैं

उमानाथ ने न्यायाधीश की निर्ममता से कहा- तुम जैसा समझो।

एक माता अपने बच्चे को गोद में लेते हैं

फूलमती की संपूर्ण आत्मा मानो इस वज्रपात से चीत्कार करने लगी। उसके मुख से जलती हुई चिनगारियों की भाँति यह शब्द निकल पड़े- मैंने घर बनवाया, मैंने संपत्ति जोड़ी, मैंने तुम्हें जन्म दिया, पाला और आज मैं इस घर में गैर हूँ? मनु का यही कानून है? और तुम उसी कानून पर चलना चाहते हो? अच्छी बात है। अपना घर-द्वार लो। मुझे तुम्हारी आश्रिता बनकर रहता स्वीकार नहीं। इससे कहीं अच्छा है कि मर जाऊँ। वाह रे अंधेर! मैंने पेड़ लगाया और मैं ही उसकी छाँह में खड़ी नहीं हो सकती; अगर यही कानून है, तो इसमें आग लग जाये।

एक माता अपने बच्चे को गोद में लेते हैं

चारों युवकों पर माता के इस क्रोध और आतंक का कोई असर न हुआ। कानून का फौलादी कवच उनकी रक्षा कर रहा था। इन काँटों का उन पर क्या असर हो सकता था?

एक माता अपने बच्चे को गोद में लेते हैं

जरा देर में फूलमती उठकर चली गयी। आज जीवन में पहली बार उसका वात्सल्य मग्न मातृत्व अभिशाप बनकर उसे धिक्कारने लगा। जिस मातृत्व को उसने जीवन की विभूति समझा था, जिसके चरणों पर वह सदैव अपनी समस्त अभिलाषाओं और कामनाओं को अर्पित करके अपने को धन्य मानती थी, वही मातृत्व आज उसे अग्निकुंड-सा जान पड़ा, जिसमें उसका

सेन्सर टाइम्स

जीवन जलकर भस्म हो गया।

एक माता अपने बच्चे को गोद में लेते हैं

संध्या हो गयी थी। द्वार पर नीम का वृक्ष सिर झुकाए, निस्तब्ध खड़ा था, मानो संसार की गति पर क्षुब्ध हो रहा हो। अस्ताचल की ओर प्रकाश और जीवन का देवता फूलवती के मातृत्व ही की भाँति अपनी चिता में जल रहा था।

एक माता अपने बच्चे को गोद में लेते हैं

फूलमती अपने कमरे में जाकर लेटी, तो उसे मालूम हुआ, उसकी कमर टूट गयी है। पति के मरते ही अपने पेट के लड़के उसके शत्रु हो जायेंगे, उसको स्वप्न में भी अनुमान न था। जिन लड़कों को उसने अपना हृदय-रक्त पिला-पिलाकर पाला, वही आज उसके हृदय पर यों आघात कर रहे हैं! अब वह घर उसे काँटों की सेज हो रहा था। जहाँ उसकी कुछ कद्र नहीं, कुछ गिनती नहीं, वहाँ अनार्थों की भाँति पड़ी रोटियाँ खाये, यह उसकी अभिमानी प्रकृति के लिए असह्य था। पर उपाय ही क्या था? वह लड़कों से अलग होकर रहे भी तो नाक किसकी कटेगी! संसार उसे थूके तो क्या, और लड़कों को थूके तो क्या; बदमानी तो उसी की है। दुनिया यही तो कहेगी कि चार जवान बेटों के होते बुढ़िया अलग पड़ी हुई मजूरी करके पेट पाल रही है! जिन्हें उसने हमेशा नीच समझा, वही उस पर हँसेंगे। नहीं, वह अपमान इस अनादर से कहीं ज्यादा हृदयविदारक था। अब अपना और घर का परदा ढका रखने में ही कुशल है। हाँ, अब उसे अपने को नयी परिस्थितियों के अनुकूल बनाना पड़ेगा। समय बदल गया है। अब तक स्वामिनी बनकर रही,अब लौंडी बनकर रहना पड़ेगा। ईश्वर की यही इच्छा है। अपने बेटों की बातें और लातें गैरों की बातों और लातों की अपेक्षा फिर भी गनीमत हैं।

एक माता अपने बच्चे को गोद में लेते हैं

वह बड़ी देर तक मुँह ढाँपे अपनी दशा पर रोती रही। सारी रात इसी आत्म-वेदना में कट गयी। शरद का प्रभाव डरता-डरता उषा की गोद से निकला,जैसे कोई कैदी छिपकर जेल से भाग आया हो। फूलमती अपने नियम के विरुद्ध आज तड़के ही उठी, रात-भर मे उसका मानसिक परिवर्तन हो चुका था। सारा घर सो रहा था और वह आँगन में झाड़ू लगा रही थी। रात-भर ओस में भीगी हुई उसकी पक्की जमीन उसके नंगे पैरों में काँटों की तरह चुभ रही थी। पंडितजी उसे कभी इतने सवरे उठने न देते थे।

एक माता अपने बच्चे को गोद में लेते हैं

शीत उसके लिए बहुत हानिकारक था। पर अब वह दिन नहीं रहे। प्रकृति उस को भी समय के साथ बदल देने का प्रयत्न कर रही थी। झाड़ू से फुरसत पाकर उसने आग जलायी और चावल-दाल की कंकड़ियाँ चुनने लगी। कुछ देर में लड़के जागे। बहुएँ उठीं। सभी ने बुढ़िया को सर्दी से सिकुड़े हुए काम करते देखा; पर किसी ने यह न कहा कि अम्माँ, क्यों हलकान होती हो? शायद सब-के-सब बुढ़िया के इस मान-मर्दन पर प्रसन्न थे।

एक माता अपने बच्चे को गोद में लेते हैं

आज से फूलमती का यही नियम हो गया कि जी तोड़कर घर का काम करना और अंतरंग नीति से अलग रहना। उसके मुख पर जो एक आत्मगौरव झलकता रहता था, उसकी जगह अब गहरी वेदना छायी हुई नजर आती थी। जहाँ बिजली जलती थी, वहाँ अब तेल का दिया टिमटिमा रहा था, जिसे बुझा देने के लिए हवा का एक हलका-सा झोंका काफी है।

एक माता अपने बच्चे को गोद में लेते हैं

मुरारीलाल को इनकारी-पत्र लिखने की बात पक्की हो चुकी थी। दूसरे दिन पत्र लिख दिया गया। दीनदयाल से कुमुद का विवाह निश्चित हो गया। दीनदयाल की उम्र चालीस से कुछ अधिक थी, मर्यादा में भी कुछ हटे थे, पर रोटी-दाल से खुश थे। बिना किसी ठहराव के विवाह करने पर राजी हो गये। तिथि नियत हुई, बारात आयी, विवाह हुआ और कुमुद बिदा कर दी गयी फूलमती के दिल पर क्या गुजर रही थी, इसे कौन जान सकता है; पर चारों भाई बहुत प्रसन्न थे, मानो उनके हृदय

का काँटा निकल गया हो। ऊँचे कुल की कन्या, मुँह कैसे खोलती? भाग्य में सुख भोगना लिखा होगा, सुख भोगेगी; दुख भोगना लिखा होगा, दुख झेलेगी। हरि-इच्छा बेकसों का अंतिम अवलंब है। घरवालों ने जिससे विवाह कर दिया, उसमें हजार ऐब हों, तो भी वह उसका उपास्य, उसका स्वामी है। प्रतिरोध उसकी कल्पना से परे था।

एक माता अपने बच्चे को गोद में लेते हैं

फूलमती ने किसी काम मे दखल न दिया। कुमुद को क्या दिया गया, मेहमानों का कैसा सत्कार किया गया, किसके यहाँ से नेवते में क्या आया,किसी बात से भी उसे सरोकार न था। उससे कोई सलाह भी ली गयी तो यही कहा- बेटा, तुम लोग जो करते हो, अच्छा ही करते हो। मुझसे क्या पूछते हो!

एक माता अपने बच्चे को गोद में लेते हैं

जब कुमुद के लिए द्वार पर डोली आ गयी और कुमुद माँ के गले लिपटकर रोने लगी, तो वह बेटी को अपनी कोठरी में ले गयी और जो कुछ सौ पचास रूपये और दो-चार मामूली गहने उसके पास बच रहे थे, बेटी की अंचल में डालकर बोली-बेटी, मेरी तो मन की मन में रह गयी, नहीं तो क्या आज तुम्हारा विवाह इस तरह होता और तुम इस तरह विदा की जातीं!

एक माता अपने बच्चे को गोद में लेते हैं

आज तक फूलमती ने अपने गहनों की बात किसी से न कही थी। लड़कों ने उसके साथ जो कपट-व्यवहार किया था, इसे चाहे अब तक न समझी हो, लेकिन इतना जानती थी कि गहने फिर न मिलेंगे और मनोमालिन्य बढ़ने के सिवा कुछ हाथ न लगेगा; लेकिन इस अवसर पर उसे अपनी सफाई देने की जरूरत मालूम हुई। कुमुद यह भाव मन मे लेकर जाये कि अम्माँ ने अपने गहने बहुओं के लिए रख छोड़े, इसे वह किसी तरह न सह सकती थी, इसलिए वह उसे अपनी कोठरी में ले गयी थी। लेकिन कुमुद को पहले ही इस कौशल की टोह मिल चुकी थी; उसने गहने और रूपये आँचल से निकालकर माता के चरणों में रख दिये और बोली- अम्माँ, मेरे लिए तुम्हारा आशीर्वाद लाखों रूपयों के बराबर है। तुम इन चीजों को अपने पास रखो। न जाने अभी तुम्हें किन विपत्तियों का सामना करना पड़े।

एक माता अपने बच्चे को गोद में लेते हैं

फूलमती कुछ कहना ही चाहती थी कि उमानाथ ने आकर कहा- क्या कर रही है कुमुद? चल, जल्दी कर। साइत टली जाती है। वह लोग हाय-हाय कर रहे हैं, फिर तो दो-चार महीने में आयेगी ही, जो कुछ लेना-देना हो, ले लेना।

एक माता अपने बच्चे को गोद में लेते हैं

फूलमती के घाव पर जैसे मनों नमक पड़ गया। बोली- मेरे पास अब क्या है भैया, जो इसे मैं दूँगी? जाओ बेटी, भगवान् तुम्हारा सोहाग अमर करें।

एक माता अपने बच्चे को गोद में लेते हैं

कुमुद विदा हो गयी। फूलमती पछाड़ खाकर गिर पड़ी। जीवन की लालसा नष्ट हो गयी।

एक साल बीत गया।

एक माता अपने बच्चे को गोद में लेते हैं

फूलमती का कमरा घर में सब कमरों से बड़ा और हवादार था। कई महीनों से उसने बड़ी बहू के लिए खाली कर दिया था और खुद एक छोटी-सी कोठरी में रहने लगी, जैसे कोई भिखारिन हो। बेटों और बहुओं से अब उसे जरा भी स्नेह न था, वह अब घर की लौंडी थी। घर के किसी प्राणी, किसी वस्तु, किसी प्रसंग से उसे प्रयोजन न था। वह केवल इसलिए जीती थी कि मौत न आती थी।

सुख या दुःख का अब उसे लेशमात्र भी ज्ञान न था।उमानाथ का औषधालय खुला, मित्रों की दावत हुई, नाच-तमाशा हुआ। दयानाथ का प्रेस खुला, फिर जलसा हुआ। सीतानाथ को वजीफा मिला और विलायत गया, फिर उत्सव हुआ। कामतानाथ के बड़े

लड़के का यज्ञोपवीत संस्कार हुआ, फिर धूम-धाम हुई; लेकिन फूलमती के मुख पर आनंद की छाया तक न आयी! कामताप्रसाद टाइफाइड में महीने-भर बीमार रहा और मरकर उठा। दयानाथ ने अबकी अपने पत्र का प्रचार बढ़ाने के लिए वास्तव में एक आपत्तिजनक लेख लिखा और छ् महीने की सजा पायी। उमानाथ ने एक फौजदारी के मामले में रिश्तत लेकर गलत रिपोर्ट लिखी और उसकी सनद छीन ली गयी; पर फूलमती के चेहरे पर रंज की परछायीं तक न पड़ी। उसके जीवन में अब कोई आशा, कोई दिलचस्पी, कोई चिन्ता न थी। बस, पशुओं की तरह काम करना और खाना, यही उसकी जिन्दगी के दो काम थे। जानवर मारने से काम करता है; पर खाता है मन से। फूलमती बेकहे काम करती थी; पर खाती थी विष के कौर की तरह। महीनों सिर में तेल न पड़ता, महीनों कपड़े न धुलते, कुछ परवाह नहीं। चेतनाशून्य हो गयी थी।

एक माता अपने बच्चे को गोद में लेते हैं

सावन की झड़ी लगी हुई थी। मलेरिया फैल रहा था। आकाश में मटियाले बादल थे, जमीन पर मटियाला पानी। आर्द्र वायु शीत-ज्वर और श्वास का वितरण करती फिरती थी। घर की महरी बीमार पड़ गयी। फूलमती ने घर के सारे बरतन माँजे, पानी में भीग-भीगकर सारा काम किया। फिर आग जलायी और चूल्हे पर पतीलियाँ चढ़ा दीं। लड़कों को समय पर भोजन मिलना चाहिए। सहसा उसे याद आया, कामतानाथ नल का पानी नहीं पीते। उसी वर्षा में गंगाजल लाने चली।

एक माता अपने बच्चे को गोद में लेते हैं

कामतानाथ ने पलंग पर लेटे-लेटे कहा- रहने दो अम्माँ, मैं पानी भर लाऊँगा, आज महरी खूब बैठ रही।

एक माता अपने बच्चे को गोद में लेते हैं

फूलमती ने मटियाले आकाश की ओर देखकर कहा- तुम भीग जाओगे बेटा, सर्दी हो जायगी।

एक माता अपने बच्चे को गोद में लेते हैं

कामतानाथ बोले-तुम भी तो भीग रही हो। कहीं बीमार न पड़ जाओ।

एक माता अपने बच्चे को गोद में लेते हैं

फूलमती निर्मम भाव से बोली- मैं बीमार न पड़ूँगी। मुझे भगवान् ने अमर कर दिया है।

एक माता अपने बच्चे को गोद में लेते हैं

उमानाथ भी वहीं बैठा हुआ था। उसके औषधालय में कुछ आमदनी न होती थी, इसलिए बहुत चिन्तित था। भाई-भावज की मुँहदेखी करता रहता था। बोला- जाने भी दो भैया! बहुत दिनों बहुओं पर राज कर चुकी हैं, उसका प्रायश्चित तो करने दो।

एक माता अपने बच्चे को गोद में लेते हैं

गंगा बढ़ी हुई थी, जैसे समुद्र हो। क्षितिज के सामने के कूल से मिला हुआ था। किनारों के वृक्षों की केवल फुनगियाँ पानी के ऊपर रह गयी थीं। घाट ऊपर तक पानी में डूब गये थे। फूलमती कलसा लिये नीचे उतरी, पानी भरा और ऊपर जा रही थी कि पाँव फिसला। सँभल न सकी। पानी में गिर पड़ी। पल-भर हाथ-पाँव चलाये, फिर लहरें उसे नीचे खींच ले गयीं। किनारे पर दो-चार पंडे चिल्लाए- %अरे दौड़ो, बुढ़िया डूबी जाती है। दो-चार आदमी दौड़े भी लेकिन फूलमती लहरों में समा गयी थी, उन बल खाती हुई लहरों में, जिन्हें देखकर ही हृदय काँप उठता था।

एक ने पूछा- यह कौन बुढ़िया थी?

एक माता अपने बच्चे को गोद में लेते हैं

‘अरे, वही पंडित अयोध्यानाथ की विधवा है।’ ‘अयोध्यानाथ तो बड़े आदमी थे?’

‘हाँ थे तो, पर इसके भाग्य में ठोकर खाना लिखा था।’

‘उनके तो कई लड़के बड़े-बड़े हैं और सब कमते हैं?’

‘हाँ, सब हैं भाई; मगर भाग्य भी तो कोई वस्तु है!

सफल अभिनेता माने जाते हैं

आशीष विद्यार्थी



आशीष को 1995 में फिल्म द्रोहकाल में अपने शानदार अभिनय के लिए सर्वश्रेष्ठ सह अभिनेता श्रेणी में राष्ट्रीय फिल्म पुरस्कार से भी नवाजा गया था। इसके अलावा उन्हें 1996 में बंगाली जर्नलिस्ट एसोसिएशन की ओर से फिल्म 'इस रात की सुबह नहीं' के लिए सर्वश्रेष्ठ अभिनेता का पुरस्कार भी दिया गया। इसी फिल्म के लिए उन्हें सर्वश्रेष्ठ विलेन श्रेणी में स्टार स्क्रीन पुरस्कार भी मिला।

बॉलीवुड में जिन चरित्र अभिनेताओं की पहचान दमदार कलाकार के रूप में होती है उनमें शुमार हैं आशीष विद्यार्थी। फिल्म में पात्र चाहे नकारात्मक हो या सकारात्मक, वह अपने किरदार में जान डाल देते हैं। थियेटर से जुड़े रहे अभिनेताओं की यह खासियत होती है कि वह जो किरदार निभा जाएं वह अमर हो

जाता है। आशीष विद्यार्थी को कला विरासत में मिली और उन्होंने अपनी मंजिल तक पहुंचने के लिए कड़ा संघर्ष किया। आज बॉलीवुड में उनकी जो पहचान है वह उन्हें अपनी मेहनत के बल पर मिली है। आशीष का बॉलीवुड में कोई गॉडफादर नहीं रहा जिसके चलते उन्हें शुरू में अच्छा ब्रेक नहीं मिला लेकिन

उनके काम को जैसे जैसे दर्शक सराहते गये उनके लिए आगे की राह आसान होती गयी।

आशीष सिर्फ बॉलीवुड के ही कलाकार नहीं हैं बल्कि वह तो कई दक्षिण भारतीय फिल्मों में भी अपने अभिनय का जलवा बिखेर चुके हैं। अभिनय पथ पर आगे बढ़ने के लिए वह अपने माता पिता को प्रेरणा मानते हैं जिन्होंने विपरीत रास्तों से गुजरते हुए सारी उम्र कला की सेवा में गुजार दी। दक्षिण भारतीय फिल्मों में पिछले लगभग १२ वर्ष से सक्रिय आशीष ने बताया कि उनके पिता गोविन्द विद्यार्थी ने केरल में हिन्दी प्रचारिणी सभा के तहत हिन्दी सीखी और पत्रकार गणेश शंकर विद्यार्थी से प्रभावित होकर वर्ष १९३५ में अपने नाम के आगे 'विद्यार्थी' उपनाम जोड़ा। केरल से उनके पिता सीधे इलाहाबाद गये और वहां प्रेमचंद के संपर्क में आये। उसके बाद वह काशी पहुंचे और काशी विद्यापीठ से संस्कृत से 'शास्त्री' की उपाधि प्राप्त की। उसी दौरान वह साधु बन गये और कुछ ही दिनों के बाद कम्युनिस्ट बन गये। आशीष के पिता ने वर्ष १९४७ तक भारतीय कम्युनिस्ट पार्टी के प्रथम महासचिव कामरेड पीसी जोशी के व्यक्तिगत सहायक के बतौर काम किया। भाकपा के विभाजन के बाद उनके पिता दिल्ली आये और संगीत नाटक अकादमी की पहली महासचिव निर्मला जोशी के साथ मिलकर संगीत नाटक अकादमी को शुरू करने में अहम भूमिका निभाई। आशीष की मां रेवा विद्यार्थी भी कथक की प्रसिद्ध नृत्यांगना थीं जो पंडित अक्षय महाराज और पंडित शंभू महाराज

की शिष्या थीं। आशीष की शादी अभिनेत्री राजोशी के साथ हुई और उनका एक बेटा अर्ध है। राजोशी मशहूर अभिनेत्री शकुंतला बरूआ के बेटे हैं।

आशीष कहते हैं कि दिल्ली में पढ़ाई लिखाई करने के बाद उन्होंने एनएसडी से वर्ष १९८७ से ९० बैच में अभिनय की पढ़ाई की। पढ़ाई के दौरान वह 'संभव' नामक ग्रुप से जुड़े रहे और पढ़ाई के बाद उन्होंने एक साल तक टेलिविजन पर विनोद दुआ और माइक पांडे के साथ सहायक के बतौर काम किया और बाद में एनके शर्मा के थियेटर ग्रुप 'एक्ट वन' के साथ जुड़े रहने के बाद वर्ष १९९२ में मुंबई आ गये। बॉलीवुड में लंबे समय तक काम करने के बाद पिछले १२ वर्ष से वह दक्षिण भारतीय सिनेमा उद्योग से जुड़े हैं जहां वह तमिल, तेलुगु और मलयालम की लगभग २०० फिल्मों कर चुके हैं। कन्नड़ फिल्म 'एके ४७' में उनके द्वारा निभाया गया दाउद का किरदार काफी पसंद किया गया था। इस फिल्म में वह कन्नड़ सुपरस्टार शिवराजकुमार के साथ नजर आये थे। हालिया प्रदर्शित फिल्म 'बर्फी' में भी उनके काम को खूब पसंद किया गया।

आशीष को १९९५ में फिल्म द्रोहकाल में अपने शानदार अभिनय के लिए सर्वश्रेष्ठ सह अभिनेता श्रेणी में राष्ट्रीय फिल्म पुरस्कार से भी नवाजा गया था। इसके अलावा उन्हें १९९६ में बंगाली जर्नलिस्ट एसोसिएशन की ओर से फिल्म 'इस रात की सुबह नहीं' के लिए सर्वश्रेष्ठ अभिनेता का पुरस्कार भी दिया गया। इसी फिल्म के लिए उन्हें सर्वश्रेष्ठ विलेन श्रेणी में स्टार स्क्रीन पुरस्कार भी मिला।

गर्मी में तरावट देने वाला सेहतमंद फल संतरा

मीठा रस भरा संतरा बच्चों को ही नहीं बड़ों को भी अच्छा लगता है। इसका वानस्पतिक नाम चित्तुस रेतिकुलाता ब्लेंको है। यह आरेकासी परिवार का सदस्य है। संतरे का वृक्ष मध्यम आकार का झाड़ीनुमा तथा कांटेदार वृक्ष होता है। यह उष्ण कटिबंधीय वातावरण में उगता है। इसके पत्ते, छोटे, गोल-बेलनाकार तथा छोटे डंठलवाले होते हैं। कच्चा फल हरा होता है जबकि पकने पर पीला, नारंगी, मीठा एवं रसवाला हो जाता है। इसका फल एक चिकने व सख्त छिलके के अंदर सुरक्षित रहता है। रस और गूदा विभिन्न फाड़ियों के रूप में पतली सी झिल्ली में होता है।

यों तो संतरा एक मौसमी फल है परन्तु यह सारे देश में आसानी से उपलब्ध हो जाता है। इसकी पैदावार नागपुर, असम में सिलहट और उत्तर प्रदेश के पहाड़ी भागों में अधिक होती है। नागपुर का संतरा अपने स्वाद के लिए बहुत प्रसिद्ध है। कृषि वैज्ञानिकों ने इसकी विभिन्न



किस्में पैदा करके इसे विभिन्न जलवायु के अनुकूल बना लिया है।

संतरा बहुत उपयोगी फल है। गर्मी में तो इसकी उपयोगिता बहुत बढ़ जाती है क्योंकि इससे उष्णता शांत होती है।

आयुर्वेद के अनुसार संतरा वातनाशक, तृषाशामक, दाह, ज्वर एवं हृदय विकार को दूर करने वाला होता है। यह मुंह की दुर्गंध दूर करता है। इससे कब्ज भी दूर होती है। इसमें लगभग 87.4 प्रतिशत पानी, 10.5 प्रतिशत कार्बिनक

पदार्थ, 0.1 प्रतिशत प्रोटीन और 0.3 प्रतिशत वसा होता है। यह फल विटामिन %सी% का भंडार होता है।

गर्मियों में बार-बार प्यास लगने पर पके संतरे का ताजा फाड़ियों को चूसने से प्यास शांत होती है। जी मिचलाने और उल्टी होने पर भी संतरे की ताजा फाड़ियों को चूसना लाभकर होता है। बुखार में जब रोगी को बेचैनी होती है, बार-बार प्यास लगती है, मुंह सूख जाता है तो रोगी को मीठे संतरे की फाड़ियों चूसने को दें। इससे रोगी तृप्त एवं शांत होता है। बुखार एवं खांसी में आराम के लिए मीठे संतरे के गूदे में शक्कर या चीनी डालकर गर्म करके रोगी को खिलाएं। परन्तु ध्यान रखें कि संतरा मीठा ही हो क्योंकि खट्टे संतरे के ज्यादा सेवन से कफ विकार हो जाता है।

पायरिया के कारण यदि मसूढ़े फूल जाएं तथा उनमें सड़न के कारण दुर्गंध व रक्त आने लगे तो रोगी को प्रतिदिन संतरे का ताजा रस दिया जाना चाहिए। साथ ही संतरे के छिलकों को बारीक पीसकर दंत मंजन में मिला लें फिर इस मंजन से धीरे-धीरे मसूढ़ों की मालिश करें। इससे रोगी को लाभ होगा। छोटे शिशुओं को यदि ताजा संतरे का

रस थोड़ी मात्रा में नियमित रूप से पिलाया जाए तो उनका शरीर तंदुरुस्त रहता है तथा रक्त शुद्ध रहता है। इससे उनकी हड्डियां मजबूत होती हैं तथा उनका पूर्ण विकास होता है। खाज-खुजली होने पर भी संतरे का रस पीने से राहत मिलती है। साथ ही प्रभावित स्थान पर ताजा संतरे का छिलका रगड़ना चाहिए। इसके छिलके से आंखें भी साफ हो जाती हैं।

गर्भवती महिलाओं को प्रतिदिन संतरे का सेवन करना चाहिए इससे मां तथा गर्भस्थ शिशु दोनों का स्वास्थ्य अच्छा रहता है। गर्भवती महिलाओं को होने वाले वमन तथा अतिसार के लिए संतरे के छिलके के चूर्ण की कुछ मात्रा देकर संतरे का रस पिलाएं।

यदि शिशुओं के पेट में कृमि हो जाएं तो संतरे के छिलकों को चार कप पानी में चौथाई शेष रहने तक उबालें, फिर छान कर उसमें थोड़ी सी हिंग मिलाकर एक चम्मच शिशु को नियमित रूप से सुबह-शाम पिलाएं। इससे पेट के कृमि शीघ्र ही नष्ट हो जाएंगे।

प्रतिदिन प्रातःकाल निराहार एक-दो रसीले संतरे खाने से मंदाग्नि की शिकायत दूर होती है। हृदय तथा छाती की कमजोरी, पेट की गड़बड़ तथा श्वास की बीमारी में संतरे का सेवन लाभ देता है। इन्फ्लुएंजा के लिए संतरा रामबाण औषधि है। इन्फ्लुएंजा होने पर लगातार तीन-चार दिन ताजा संतरा खाएं और उबला हुआ ठंडा पानी पिएं।

विजयन ने केंद्रीय मंत्री मुरलीधरन पर साधा निशाना, कहा- ‘अति आत्मविश्वास’ वाली बात उनकी ‘अज्ञानता’ दिखाती है

तिरुवनंतपुरम-केरल में कोविड-19 के मामलों से निपटने में ‘अति आत्मविश्वास’ दिखाने के कारण दो जिलों में संक्रमण के मामले बढ़ने की केंद्रीय मंत्री वी मुरलीधरन की बात पर मुख्यमंत्री पिनराई विजयन ने बुधवार को कहा कि यह बयान केंद्रीय मंत्री की ‘अज्ञानता’ दर्शाता है। विजयन ने यहां संवाददाताओं से कहा, “मुझे विश्वास नहीं होता कि एक केंद्रीय मंत्री यह बात कहेंगे। अगर उन्होंने ऐसा कहा है तो यह उनकी अज्ञानता दर्शाता है।” उन्होंने कहा, “इस तरह की प्रतिक्रिया किसी केंद्रीय मंत्री को बिल्कुल शोभा नहीं देती। मुझे भरोसा नहीं होता कि वह इस तरह की कोई बात कहेंगे। राज्य ने गंभीरता से विचार-विमर्श के बाद जोनों के संबंध में फैसला लिया है।” केंद्रीय विदेश राज्य मंत्री मुरलीधरन ने 28 अप्रैल को एक फेसबुक पोस्ट में आरोप लगाया था कि कोरोना वायरस महामारी से निपटने में केरल के ‘अति आत्मविश्वास’ की वजह से इडुक्कि और कोट्टयम जिलों में संक्रमण के मामले बढ़ गए। उनकी इस टिप्पणी के जवाब में राज्य के पर्यटन मंत्री



कडकम्पल्ली सुरेंद्रन ने पलटवार करते हुए कहा कि वह इसके बजाय प्रधानमंत्री नरेन्द्र मोदी के गृह राज्य गुजरात का आकलन करें (जहां लगातार कोरोना वायरस के मामले बढ़ रहे हैं) और विभिन्न देशों में फंसे प्रवासियों को वापस लाने पर ध्यान केन्द्रित करें।

मुरलीधरन ने अपनी पोस्ट में लिखा था कि इडुक्कि और कोट्टयम को ग्रीन जोन घोषित करते हुए केरल के पांच जमीन पर नहीं टिक रहे। उन्होंने लिखा

था, “कुछ घंटों बाद ही इन जिलों में नए मामले सामने आ गए। सरकार सतर्क होने के बजाय अपना गुणगान कर रही थी, जिसके चलते परेशानी में पड़ गई। जनसंपर्क गतिविधियों में लिप्त होने की बजाय उन्हें वैश्विक महामारी से निपटने पर ध्यान देना चाहिए।” केन्द्रीय मंत्री एवं भाजपा नेता की इन टिप्पणियों पर पलटवार करते हुए सुरेंद्रन ने उनसे दूसरे राज्यों से केरल का मॉडल अपनाने की अपील करने को कहा।

सुरेंद्रन ने संवाददाताओं से कहा, “गुजरात प्रधानमंत्री नरेन्द्र मोदी का गृह राज्य है और वहां लगातार कोविड-19 के मामले बढ़ रहे हैं। देश के अधिकतर शहर कोरोना वायरस से बुरी तरह प्रभावित हैं। राष्ट्रीय राजधानी उनकी नाक के नीचे है। उनके पास, जो वे करना चाहें उसका अधिकार है। तब भी वहां वायरस नियंत्रण के बाहर है।” उन्होंने साथ ही यह भी कहा कि अगर कोविड-19 से निपटने में केरल की ओर से कोई कमी रह भी गई है तो केन्द्रीय मंत्री सहित कोई भी उस ओर ध्यान दिला सकता है। सुरेंद्रन ने कहा कि केरल के अधिकतर जिलों की सीमा अन्य राज्यों के साथ लगी है। उन्होंने इडुक्कि का जिक्र करते हुए कहा कि इस जिले की सीमा तमिलनाडु से लगी है। उन्होंने कहा, “केरल में प्रभावित कुछ लोग दूसरे राज्यों से आए थे। अहमदाबाद में कई मामले हैं। क्या इसलिए कि वहां लॉकडाउन नहीं है?” उन्होंने कहा कि केन्द्रीय मंत्री को ऐसी टिप्पणी करने से पहले वास्तविकता को समझना चाहिए।

राहुल गांधी से बोले रघुराम राजन, गरीबों की मदद के लिए लगेगे 65,000 करोड़



नई दिल्ली- भारतीय रिजर्व बैंक के पूर्व गवर्नर और जाने माने अर्थशास्त्री रघुराम राजन ने लॉकडाउन के बाद आर्थिक गतिविधियां जल्द खोलने की पैरवी करते हुए पिछले दिनों कहा कि कोरोना वायरस से निपटने के साथ ही लोगों की जीविका की सुरक्षा करनी होगी। कांग्रेस के पूर्व अध्यक्ष राहुल गांधी के साथ वीडियो कॉन्फ्रेंसिंग के माध्यम से किए गए संवाद के दौरान उन्होंने यह भी कहा कि देश के गरीबों, मजदूरों और किसानों की प्रत्यक्ष अंतरण के माध्यम से वित्तीय मदद करनी होगी जिसमें 65 हजार करोड़ रुपये खर्च होंगे। गांधी के एक प्रश्न के उत्तर में राजन ने कहा कि सामाजिक सौहार्द में लोगों की भलाई है और इस चुनौतीपूर्ण समय में हम विभाजित रहने का जोखिम नहीं उठा सकते।

राजन ने कहा, “हमारी अर्थव्यवस्था 200 लाख करोड़ रुपये से ज्यादा की है और हम 65 हजार करोड़ रुपये का वहन कर सकते हैं।” उन्होंने कहा कि अर्थव्यवस्था को जल्द खोलना होगा और साथ ही कोरोना वायरस से निपटने के कदम भी उठाते रहने होंगे। रिजर्व बैंक के पूर्व गवर्नर ने भारत में कोरोना की जांच की संख्या के मुद्दे पर कहा कि अमेरिका में रोजाना औसतन 150000 जांच हो रही है। बहुत सारे विशेषज्ञ कह रहे हैं कि पांच लाख लोगों की जांच करनी चाहिए। भारत में हम रोजाना 20-25 हजार जांच कर रहे हैं। ऐसे हमें बड़े पैमाने पर जांच करनी होगी।

कर्मचारियों को प्रताड़ित करने के आरोपों से प्रीति

पटेल के मुक्त होने की उज्जीद

कर्मचारियों को प्रताड़ित करने के आरोपों से प्रीति पटेल के मुक्त होने की उज्जीद दिखाई दे रही है। ‘द डेली टेलीग्राफ’ ने बुधवार को कहा कि कैबिनेट सचिव सर मार्क सेडविल द्वारा पिछले हफ्ते रिपोर्ट पूरी कर ली गई थी और प्रधानमंत्री बोरिस जॉनसन के कोरोना से ठीक होकर सोमवार को ‘10 डाउनिंग स्ट्रीट’ लौटने पर उन्हें यह रिपोर्ट सौंप दी गई।

लंदन-ब्रिटिश मीडिया की एक रिपोर्ट के मुताबिक एक आंतरिक जांच में ब्रिटेन की गृह मंत्री प्रीति पटेल के उन आरोपों से मुक्त होने की पूरी उम्मीद है, जिनमें कहा गया था कि उन्होंने अपने कार्यालय और उनके तहत आने वाले अन्य दफ्तरों में लोकसेवकों को धमकाया। आधिकारिक रूप से जांच अभी ‘जारी’ है लेकिन पटेल के सहयोगियों का दावा है कि अधिकारियों ने सभी जानकारीयों

की समीक्षा की है और भारतीय मूल की वरिष्ठ कैबिनेट मंत्री के खिलाफ ‘कोई साक्ष्य’ नहीं पाया है।

‘द डेली टेलीग्राफ’ ने बताया कि कैबिनेट सचिव सर मार्क सेडविल द्वारा पिछले हफ्ते रिपोर्ट पूरी कर ली गई थी और प्रधानमंत्री बोरिस जॉनसन के कोरोना से ठीक होकर सोमवार को ‘10 डाउनिंग स्ट्रीट’ लौटने पर

उन्हें यह रिपोर्ट सौंप दी गई। पटेल के रोजगार मंत्री रहने के दौरान उनके साथ कार्य और पेंशन विभाग में काम कर चुके पूर्व मंत्री इयान डंकन स्मिथ ने अखबार को बताया, ‘जांच में मैं बिल्कुल स्पष्ट था कि उनके (पटेल के) खिलाफ कोई आरोप नहीं था, न ही उस समय उनसे कोई पूछताछ की गई थी।’ जॉनसन ने मंत्रियों के लिये ब्रिटेन में लागू आचार संहिता के तहत इस आंतरिक जांच के लिये आदेश दिये थे, क्योंकि गृह मंत्रालय के सबसे वरिष्ठ नौकरशाह सर फिलिप रुटनम ने पटेल पर उंगली उठाते हुए नाटकीय रूप से इस्तीफा दे दिया था। इसके बाद उन्होंने पटेल और गृह मंत्रालय के खिलाफ अलग से कानूनी प्रक्रिया शुरू की थी। अब आंतरिक जांच में प्रीति पर लगे आरोपों के समर्थन में कुछ नहीं मिलने की बात सामने आने पर विपक्ष अब इस रिपोर्ट को सार्वजनिक किये जाने की मांग कर रहा है।

जामिया हिंसा मामले में शरजील इमाम के खिलाफ UAPA लगाया गया

दिल्ली पुलिस के अतिरिक्त प्रवक्ता अनिल मिजल ने बताया कि उसे जामिया में 13 और 15 दिसंबर 2019 को हुई हिंसा के दो मामलों में गिरफ्तार किया गया है। उस पर 13 दिसंबर के अपने भाषण के जरिये हिंसा भड़काने के आरोप हैं।

नई दिल्ली- दिल्ली पुलिस ने संशोधित नागरिकता कानून (सीएए) के खिलाफ यहां जामिया मिल्लिया इस्लामिया के पास पिछले साल दिसंबर में हुए हिंसक प्रदर्शन के सिलसिले में जेएनयू के पूर्व छात्र शरजील इमाम के खिलाफ गैरकानूनी गतिविधि (रोकथाम) कानून (यूएपीए) लगाया है। शरजील की वकील मिशिका सिंह ने बताया कि शरजील के खिलाफ मामले में यूएपीए की धारा 13 (गैर कानूनी गतिविधि) के तहत आरोप जोड़े गये। इससे पहले, पुलिस ने शरजील के खिलाफ देशद्रोह का आरोप दर्ज किया था। उस पर हिंसा का कारण बना, द्वेष बढ़ाने वाला भाषण देने का आरोप लगाया गया था।

दिल्ली पुलिस के अतिरिक्त प्रवक्ता अनिल मिजल ने बताया कि उसे जामिया में 13 और 15 दिसंबर 2019 को हुई हिंसा के दो मामलों में



गिरफ्तार किया गया है। उस पर 13 दिसंबर के अपने भाषण के जरिये हिंसा भड़काने के आरोप हैं। एकत्र किये गये साक्ष्यों के आधार पर आईपीसी की धारा 124 ए और 153 ए भी लगाई गई है। पुलिस ने अपने पूरक आरोपपत्र में कहा है कि सीएए के खिलाफ पिछले साल 15 दिसंबर को जामिया छात्रों द्वारा आयोजित

एक विरोध मार्च के परिणामस्वरूप हिंसा भड़की थी। पुलिस ने मुख्य मेट्रोपोलिटन मजिस्ट्रेट अदालत में दाखिल अपनी अंतिम रिपोर्ट में कहा है कि भीड़ ने बड़े पैमाने पर हिंसा की, जिस दौरान कई सार्वजनिक एवं निजी संपत्ति को नष्ट कर दिया गया जबकि कई पुलिसकर्मी भी घायल हुए। गया था। दिल्ली पुलिस ने जामिया परिसर

में भड़काऊ भाषण देने को लेकर भी उसके खिलाफ मामला दर्ज किया है। उसके खिलाफ असम में आतंक रोधी कानून के तहत एक मामला दर्ज किया गया है। मणिपुर और अरुणाचल प्रदेश ने भी उसके खिलाफ प्राथमिकी दर्ज की है। दरअसल, उसने कथित तौर पर असम और शेष पूर्वोत्तर को देश से अलग करने की धमकी दी थी।

अमेरिकी कंपनी का दावा- कोरोना वायरस के खिलाफ प्रभावी साबित हुई उसकी ये दवा



वाशिंगटन- अमेरिका की एक बायोटेक कंपनी ने दावा किया है कि देश के एक बड़े सरकारी अध्ययन में कोरोना वायरस के खिलाफ उसकी प्रायोगिक दवा प्रभावी साबित हुई है। गिलीड साइंसेज की मानें तो उसकी दवा रेमडेसिविर कोरोना वायरस के खिलाफ इस तरह की जांच में खरी उतरने वाली पहली दवा होगी। इलाज

का विकल्प मिलने पर महामारी से निपटने की दिशा में बड़ा कदम हो सकता है क्योंकि स्वास्थ्य अधिकारी अभी किसी तरह का टीका विकसित होने में कम से कम एक साल या उससे अधिक समय लगने की संभावना जता रहे हैं।

नेशनल इंस्टीट्यूट ऑफ हेल्थ (एनआईएच) द्वारा कराए गये अध्ययन में दुनियाभर में अस्पतालों में भर्ती कोरोना वायरस के करीब 800 रोगियों में रेमडेसिविर बनाम सामान्य देखभाल का परीक्षण किया गया। गिलीड ने परीक्षण के परिणाम का ब्योरा नहीं दिया, लेकिन कहा कि जल्द ही इस बाबत घोषणा की जा सकती है। एनआईच के अधिकारियों ने इस बारे में कोई प्रतिक्रिया अभी नहीं दी।

गलत पेंशन जारी होने पर नहीं की जा सकती रिकवरी -हाईकोर्ट

नई दिल्ली-पंजाब-हरियाणा हाई कोर्ट ने अपने एक महत्वपूर्ण फैसले में स्पष्ट कर दिया कि पेंशन फिक्स करने के बाद कर्मचारी को यदि पेंशन जारी कर दी जाती है, तो उसे गलत करार देकर रिकवरी नहीं की जा सकती है। हाईकोर्ट ने यह आदेश चंडीगढ़ निवासी धर्मपाल की एक याचिका पर सुनवाई करते हुए दिया।

धर्मपाल ने अपनी याचिका में कोर्ट को बताया कि वह भारतीय सेना से जुलाई 1983 में सेवानिवृत्त हुआ था। उसे सितंबर 2018 में केंद्र सरकार से विभागीय गलती की वजह से अधिक पेंशन जारी होने का एक नोटिस मिला था। केंद्र सरकार ने इसके लिए रिजर्व बैंक के दिशा निर्देश का हवाला देते हुए

उससे 2,03,517 रुपये की रिकवरी किए जाने की जानकारी दी थी।

धर्मपाल ने एक मांग पत्र देकर इस नोटिस का विरोध किया, लेकिन केंद्र सरकार ने उसके मांग पत्र को खारिज कर दिया था। केंद्र के इस आदेश को याची ने हाईकोर्ट में चुनौती देते हुए रिकवरी के आदेश को रद्द करने की मांग की। कोर्ट ने इस मामले में याची की गलती न होने पर उसे दंडित किए जाने के फैसले पर सवाल उठाया। अधिकारियों ने अपनी गलती छिपाने के लिए याची की पेंशन से 2,03,517 की रिकवरी कर ली। कोर्ट ने केंद्र के रिकवरी के आदेश को रद्द करते हुए रिकवरी की राशि याची को वापस करने के आदेश जारी किए हैं।